जय श्रीकृष्ण

श्रीमद्भागवत संदेश

4

शरद अंक

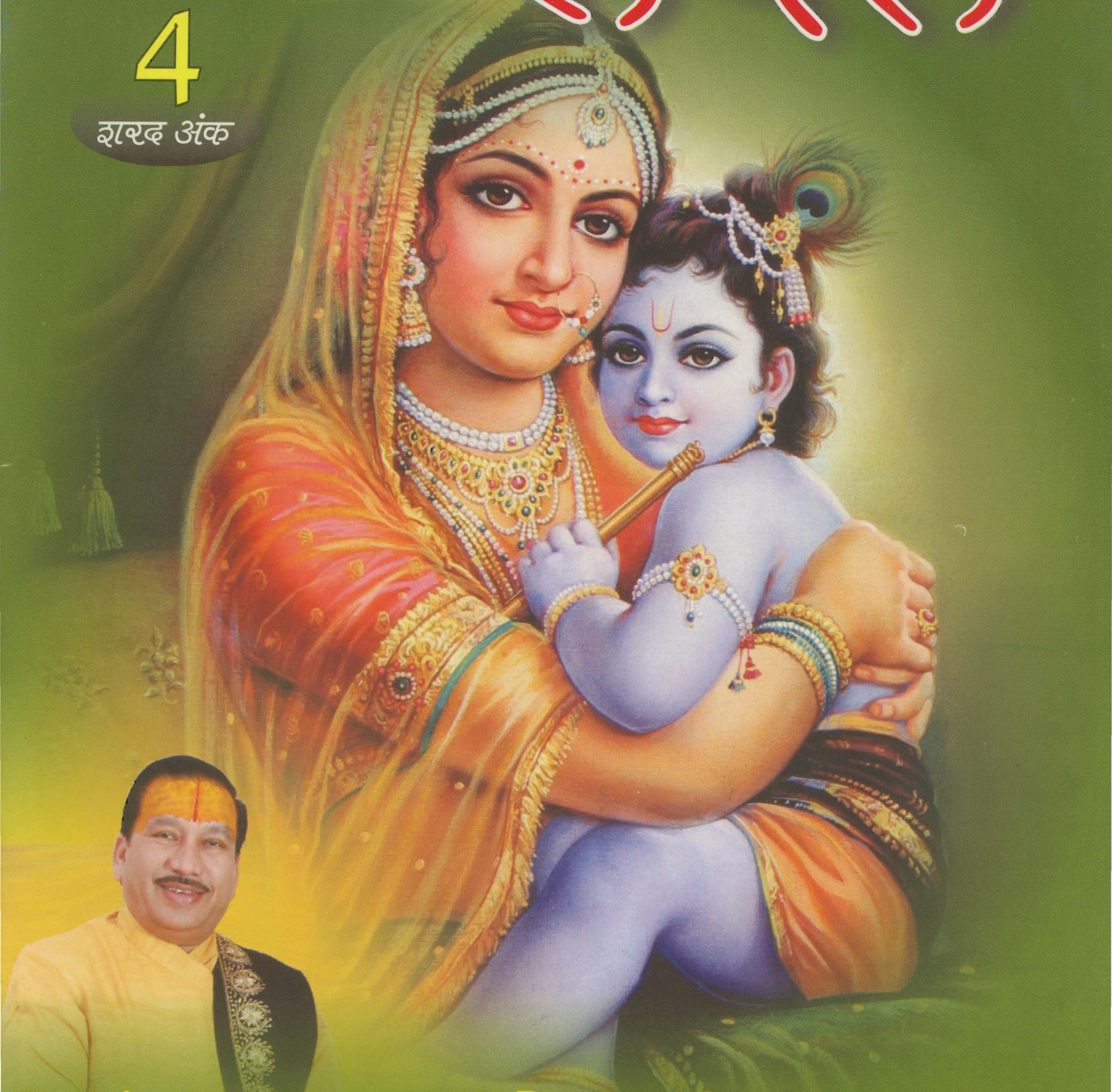

संरक्षक : भागवत भास्कर श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री (ठाकुरजी)

कभी खुशी... कभी गम...

सौ. करुणा एवं चि. अमित के शुभविवाह पर
श्रीमती एवं श्रीजयप्रकाश जी शर्मा तथा श्रीमती एवं श्रीठाकुरजी

अपनी माँ की अन्तिम यात्रा में श्रीठाकुरजी एवं अन्य परिजन

संरक्षक :
- भागवत भास्कर
श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री 'ठाकुरजी'

प्रकाशक :
- श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
रमणरेती, वृन्दावन–281121

सम्पादक :
- पं. श्रीकिशन लाल जी शास्त्री
भागवत मर्मज्ञ

सह सम्पादक :
- पं. बिष्णु पाठक (सारस्वत), कोलकाता
ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ
दूरभाष: 9331033090

सम्पादक मण्डल
- श्रीदेवकीनन्दन जोशी, कटक
- श्रीमती मीना अग्रवाल, दिल्ली
- श्री विनय पाठक, मथुरा
- श्रीमती बृजबाला गौड़, वृन्दावन
- डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया, वृन्दावन

पत्राचारः
- पं. श्रीहरीशंकर उपाध्याय
श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
श्रीभागवत कृपा निकुंज
रमणरेती, वृन्दावन–281121 (मथुरा), उ.प्र.
दूरभाष : 0565–2540857, 9897042861

मुद्रण–संयोजन :
- श्रीहरिनाम प्रेस
बाग बुन्देला, लोई बाजार
वृन्दावन. फोन : 2442415

श्रीमद्भागवत सन्देश

४
वसन्त अंक

श्रीगोपी गीत

न खलु गोपिकानन्दनो
भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान् सात्वतां कुले।।

श्रीमद्भागवत–10/31/4

यह अवश्य की एकमात्र तूँ ,
यसुमती सती के हि लाड़ले।
ललन हो नहीं हो सही सभी,
शरीर धारियों के हृदिस्थ तू।।
अज विनीत तूँ विश्वपाल हो,
धरम धेनु भूदेवपाल हो।
अवतरे यदूवंश में विभो,
प्रणत पाल हो के यहाँ सदा।।

• हिन्दी पद्यानुवाद : श्रीरामानुज शास्त्री जी •

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

1 : **श्रीगोपीगीत :** पद्यानुवाद सहित

3 : **सम्पादकीय / सह सम्पादकीय**

4 : **पं. श्रीकृष्णचन्द्रजी (श्रीठाकुरजी) :** एक परिचय

5 : **मातृ देवो भव :** पं. श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री

7 : **सनातन धर्म के द्वारा... :** पं. श्रीरामानुज जी शास्त्री

11 : **प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व :** श्री ठाकुरजी

12 : **नित्य कर्म के कुछ आवश्यक मन्त्र :** संकलित

13 : **धन्या ब्रज वसुन्धरा :** श्री सौरभ गौड़

17 : **वास्तु—एक दृष्टि में :** संकलित

18 : **12 राशियों का फल :** पं. बिष्णु पाठक, कोलकाता

22 : **गुरु बिन ज्ञान न होइ :** श्रीकिशनलाल जी शास्त्री

24 : **साधुता और अविद्या :** श्रीविष्वक्सेनाचार्य जी

25 : **श्री राम नवमी :** श्री नारायण कवि

26 : **वृन्दावन कुम्भ :** श्रीआदित्य उपाध्याय

27 : **माँ की ममता :** श्री शिवकुमार रुईया, कोलकाता

28 : **भक्ति—रस :** डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया

31 : **गजल :** श्री बिन्दु जी महाराज

32 : **आँसू :** श्री बी. डी. मित्तल 'शूल'

33 : **व्रत पर्व : 16 मार्च से 27 मई 2010**

38 : **प्रेम प्रचार :** उपलब्ध साहित्य

39 : **श्री कृष्ण प्रेम संस्थान के सेवा प्रकल्प**

40 : **क्रूज़ यात्रा : श्रीमद्भागवत सप्ताह**

भागवत भास्कर श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री 'ठकुरजी' के आगामी कार्यक्रम

1.	16 मार्च से 22 मार्च 2010	सती द्वीप (हरिद्वार) कुम्भ महोत्सव
2.	23 मार्च से 30 मार्च 2010 ●	हरिद्वार (उ.प्र.) चित्रकूट अखंड आश्रम, सप्तसरोवर
3.	02 अप्रैल से 08 अप्रैल 2010 ☆	फिरोजाबाद (उ.प्र.)
4.	10 अप्रैल से 19 अप्रैल 2010 ☆	सिंगापुर क्रूज यात्रा
5.	20 अप्रैल से 27 अप्रैल 2010	पीतमपुरा, दिल्ली
6.	30 अप्रैल से 8 मई 2010 ●	श्रीराम कथा, कटक (उड़ीसा)

● सीधा प्रसारण : संस्कार चैनल पर

☆ विशेष प्रसारण : संस्कार चैनल पर

सम्पादकीय

श्री कृष्ण प्रेम संस्थान की ओर से प्रकाशित श्रीमद्भागवत सन्देश का चतुर्थ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मिश्रित अनुभव की प्राप्ति हो रही है।

संस्थान संरक्षक भागवत भास्कर ``श्री ठाकुर जी'' की द्वितीय सुपुत्री सौभाग्यवती करुणा का मंगल परिणय मथुरा स्थित प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मान् जय प्रकाश शर्मा जी के कनिष्ठ सुपुत्र चि. अमित के संग 22 नवम्बर 2009 रविवार को सुसम्पन्न हुआ, नव दम्पत्ति को हृदय से आशीष एवं उनके मांगलिक-उज्ज्वल भविष्य की शुभ कामना।

विगत 02 फरवरी 2010 मंगलवार को रात्रि 08 बजे ``श्री ठाकुर जी'' की परम वन्दनीय मातु-श्री का गोलोक वास हो गया। प्रभु से उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना। साथ ही साथ पत्रिका के सह-सम्पादक चि. बिष्णु पाठक के पिताजी का भी देवलोक गमन दिनांक 10 नवम्बर मंगलवार को हो गया। उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रभु से विनत वंदना।

पं. किशन लाल शास्त्री
भागवत मर्मज्ञ

सह सम्पादकीय

श्री कृष्ण प्रेमी भक्त गण,

श्रीमद्भागवत सन्देश का चतुर्थ अंक प्रस्तुत करने में देरी हुई। कारण आपके समक्ष है। चित्त अभी भी अस्थिर है। ``ठाकुरजी'' की परम वन्दनीय माताजी का विगत 02 फरवरी को रात्रि में देवलोक वास हो गया, जिससे संस्थान से जुड़े हम सब मर्माहत हैं। पूर्व में नवम्बर 2009 में मेरे पूज्य पिताजी का शरीर शांत हो गया था। ये मेरे जीवन की अपूरणीय क्षति है। प्रभु से उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना।

परम आदरणीय ``ठाकुरजी'' की द्वितीय सुपुत्री सौ. करुणा का मंगल विवाह उत्सव चि. अमित जी के संग बड़ी धूम-धाम से श्रीधाम वृन्दावन में सम्पन्न हुआ। प्रभु से नव विवाहितों के मंगल भविष्य की कामना करता हूँ। आगामी अंक समय पर प्रस्तुत करने हेतु हम तत्पर रहेंगे-ऐसी आशा करता हूँ।

समस्त मंगल कामना सहित.....

पं. बिष्णु पाठक (सारस्वत)
ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ

अति सहज व्यक्तित्व

श्रद्धेय पं. श्रीकृष्णचन्द्र जी शास्त्री (ठाकुरजी)

वैदिक आध्यात्मिक व्यास परम्परा के प्राणाधार श्रद्धेय पं. श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री (ठाकुरजी) का जन्म वृन्दावन के निकट लक्ष्मणपुरा ग्राम (मथुरा, उ.प्र.) में 1 जुलाई 1960 में हुआ। पं. श्रीरामशरण उपाध्याय और श्रीमती चन्द्रवती देवी की इस मेधावी सन्तान ने अपने पितामह पं. भूपदेव उपाध्याय से बचपन में ही रामायण एवं कृष्ण-चरित्र का मनोयोग से श्रवण किया।

श्रीठाकुरजी को प्रारम्भिक शिक्षा के समय ही वीतराग श्रीस्वामी रामानुजाचार्यजी महाराज का सानिध्य मिला, जिनसे इन्हें गीता, बाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत एवं विशिष्टाद्वैत वेदान्त की भी शिक्षा मिली। श्रीजगन्नाथपुरी स्थित श्रीजीयर स्वामी पीठ के मठाधीश श्रीगरुड़ध्वजाचार्यजी से श्रीवैष्णव दीक्षा प्राप्त हुई तथा श्रीवैष्णव दीक्षा देने का अधिकार भी मिला।

व्याकरण में आचार्य और दर्शन शास्त्र में एम.ए. की उपाधि से विभूषित श्रीठाकुरजी ने शास्त्रीय संगीत का भी अध्ययन किया। श्रीठाकुरजी सम्भवत: देश के प्रथम ऐसे व्यास हैं, जो मात्र 48 वर्ष की आयु में श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा के 900 विशाल आयोजन कर चुके हैं। आपकी कथा शैली इतनी सरस एवं सरल है कि सभी श्रेणी के श्रोता आनन्दमग्न हो जाते हैं। आपके निर्देशन में वृन्दावन में श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की स्थापना हुई, जिसके अन्तर्गत श्रीमद्भागवत धाम में श्रीभागवत एवं वेदादि की नि:शुल्क शिक्षा व्यवस्था की गयी है। भागवतकृपा निकुंज में एक भव्य सत्संग हाल का निर्माण किया गया है जिसमें श्रीमद्भागवत सप्ताह आदि धार्मिक आयोजन एवं अनुष्ठान सम्पन्न होते हैं। एक आतिथेयम् निर्माणाधीन है जो शीघ्र ही अतिथियों के लिए आवासीय सुविधा हेतु उपलब्ध होगा।

'सर्वभूतहितेरता' की भावना से ओत प्रोत श्रीठाकुरजी अति विनम्र एवं मृदुभाषी हैं। आपका व्यक्तित्व भगवत्-भक्तों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित करता है। आपकी वाणी में दिव्य ओज है और मिठास ऐसी कि श्रीमद्भागवत कथा के श्रोता आत्मविभोर होकर अपना सर्वस्व अपने प्यारे श्रीकृष्ण को समर्पित करने को तत्पर हो उठते हैं।

श्रीठाकुरजी की शास्त्र सम्मत मान्यता है कि श्रीमद्भागवत श्रीकृष्ण-स्वरूप ही है। विद्वत्-समाज द्वारा 'भागवत भास्कर' उपाधि से सम्मानित श्रीठाकुरजी हिन्दू संस्कृति एवं वैदिक सनातन धर्म के व्यापक प्रचार हेतु मनीला, शिकागो, कनाडा, यूरोप, हांगकांग, अमेरिका तथा लंदन आदि में भी समय-समय पर श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का प्रसाद बाँट रहे हैं।

मातृ देवो भव

● श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुरजी)

''मातृ देवो भव'' यह हमारे लिए वैदिक ज्ञान वर्धक सन्देश है। इससे यह तात्पर्य निकलता है कि माता को देव मानकर रहो। देव में भी मातृ शक्ति अन्तर्निहित है।

देवो दानात् द्योतनात् वा देवदान देने से और उसके कारण ज्योतिष्मान् होने के कारण ही उन्हें देव कहा जाता है। देव देता ही देता है, लेता कुछ नहीं, यह दानशीलता माता के समान और किसमें है। माँ तो देती ही देती है लेने की कोई इच्छा नहीं रखती है। संसार की सभी जलचर, नभचर, थलचर प्रजातियों की माँ तो देती ही हैं लेने की कोई इच्छा नहीं रखती है। इसलिए माँ का आशीर्वाद अमोघ अभेद्य रक्षक होता है। निष्पाप, निर्लेप, निःस्वार्थ होता है। माँ का प्रेम स्नेह कहलाता है। उसमें स्निग्धता है चिकनाहट होती है जो शरीर संरक्षण को बल देती है।

इसी कारण इस मातृ शक्ति को व्यवहार के क्षेत्र में भी प्रथम स्नान मिला हुआ है। जैसे राधाकृष्ण, सीताराम, गौरीशंकर, लक्ष्मीनारायण आदि पत्नी के रूप में ही नहीं माता के रूप में भी वह अग्रगण्य हैं। कौशल्या नन्दन श्रीराम, सुमित्रा नन्दन लक्ष्मण, देवकीनन्दन, यशोदानन्दन श्रीकृष्ण, पार्वतीनन्दन श्रीगणेश, अञ्जनानन्दन श्रीहनुमान और रोहिणी-नन्दन श्रीबलराम आदि। इसी कारण प्रथम आदेश है। मातृ देवो भव। इसके बाद पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, और अतिथि देवो भव कहा गया है। मा - माने धातु से तृच् प्रत्यय कर मातृ शब्द की रचना हुई है जो स्वयं को गलाकर सबका मान रखती है। मान रखना ही उसका स्वभाव है। उसके लिए गलना भी उसे सुख ही प्रदान करता है। वहीं हमारे जीवन का मानक भी बनती है निर्माण करती है।

सृष्टि के विकास के लिए माता अर्थात् नारी की आवश्यकता ब्रह्मा को भी अनुभव हुई इसलिए नारी की उत्पत्ति हुई है। वह सृजन करती है। सृष्टि का विकास करती है। इसलिए ब्रह्मा उसकी देह में समाहित हैं। सृजन के बाद पालन, पोषण भी करती है। इसलिए भगवान् श्रीविष्णु विराज रहते हैं। अपने क्षीर-सागर से दूध पिला पिलाकर पोषण करती है। कण्ठ से कल्याणकारी उपदेश और आशीर्वाद देने के कारण शिव भी उसमें विराजमान् रहते हैं। जीवन के विकास के सभी तत्त्व माता में विराजमान रहते हैं।

जीवन की सभी आवश्यकताओं की आपूर्ति किसी न किसी रूप में माता ही करती है। जीवन और संसार को समझने के लिए हमें ज्ञान की आवश्यकता होती है। ज्ञान हमें विद्या से प्राप्त होता है।

विद्या की अधिष्ठातृ देवी सरस्वती हैं। जिनकी हम वसन्त पंचमी को पूजा अर्चना करते है। ज्ञान को व्यावहारिक जगत् में लाने के लिए हमें शक्ति की आवश्यकता होती है। शक्ति की अधिष्ठातृ देवी हैं दुर्गा जिनकी आराधना हम नवरात्रों में करते हैं जो शरद् और वसन्त ऋतु में वर्ष में दो बार आते हैं। जिससे मध्यकाल हेमन्त और शिशिर में षौषहार लेकर हम शक्तिशाली बनें। सांसारिक व्यवहार को लेन-देन को बढ़ाने के लिए हमें धन की आवश्यकता होती है। इसीलिए धन की अधिष्ठातृ देवी लक्ष्मी हैं। जिनकी पूजा अर्चना दीपावली के दिन करते हैं।

इस प्रकार ये तीन माताऐं सरस्वती, दुर्गा और लक्ष्मी मातृ रूपिणी पूजनीया वन्दनीया बनी हुई हैं। भारत मातृ प्रधान देश है, इसी कारण भारत ने उन सभी शक्तियों को माता कहा है जो मातृ धर्म का निर्वाह करती है। ''माता पृथ्वी पुत्रोऽहं वै पृथिव्याः'' माता पृथ्वी है और निश्चय ही मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। इसीलिए भारत माता हम सभी की पूज्य हैं वह हमें अन्न, जल, वायु, अग्नि, आकाश देकर जीवन का विस्तार करती हैं। ''वागेव विश्वा भुवनानि अज्ञे'' विश्वा वागी ने ही भुवनों की रचना की है। सृष्टि का

विकास आकाश से हुआ है। आकाश से वायु; वायु से अग्नि; अग्नि से जल; जल से पृथ्वी पर पहले जलचर, फिर नभचर, फिर स्थलचर की सृष्टि हुई। स्थल पर वनस्पति औषधि, वृक्षप, वृक्ष फिर जीवों की सृष्टि हुई। अन्तिम रचना मनुष्य है। यह है विकास का क्रम। आकाश का धर्म शब्द (शब्द-गुणकम् आकाशम्) और शब्दों का समूह वाणी कहलाती है। वाणी ही बुद्धि को प्रेरणा देती है तब हम कर्म करते हैं। उसकी ओर प्रवृत्त होते हैं। कथा (श्रीमद् भागवत कथा) कितने मनुष्यों को प्रेरणा दे रही है। इस प्रकार विश्वावाणी ने ही संसार की सृष्टि की है। पशुओं में हमने गाय को माता कहा है। इसलिए कि गाय का ही एक मात्र दूध हमारे जीवन का विकास करता है। जबकि भैंस का दूध आलसी और बकरी का दूध स्वस्थ तो बनाता है परन्तु पुष्ट नहीं बनाता। श्यामा गाय का दूध लौह प्रधान, सफेद गाय का दूध रजत (चाँदी) प्रधान और पीली गाय का दूध स्वर्ण प्रधान होता है। कई स्थानों पर गो दुग्ध मात्र से रोगियों का उपचार होते हुये देखा गया है। इसलिए गाय हमारी माता है। वृक्षों में तुलसी को हमने माँ की संज्ञा दी है। पाँच पत्ती तुलसी की प्रतिदिन सेवन से ही अनेकों रोगों की निवृत्ति होती है। वैष्णवों में तुलसी की महिमा आपको देखने को मिलेगी। बिना तुलसी की पत्ती डाले भगवान् भी भोजन नहीं स्वीकारते हैं। तुलसी की कण्ठी अनेकों चर्मरोगों का निवारण करती हैं।

इसी क्रम में हमने नदियों को भी माता की संज्ञा दी है। गंगा मैया, यमुना मैया, गोमती मैया आदि। नदियों के प्रदूषण के कारण आज हमारा जीवन संकट में पड़ा हुआ है। क्योंकि नदियाँ ही इस पृथ्वी का नाड़ी तन्त्र हैं। इस प्रकार माता का व्यापक तंत्र भारत ने ही प्रकाशित किया है।

व्याकरण में देखें तो सन्धि ही जोड़ती है और विग्रह तोड़ता है। इसीप्रकार राजनीति में सन्धि विग्रह यान है। द्वैधीभाव इस चतुर्भुखी रूप में सन्धि को ही प्रथम स्थान पर प्रतिष्ठित किया गया है। उपासना में भक्ति को प्रमुखता दी गई है। साहित्य में नवरसों में भक्ति की व्यापकता देखकर उसे दसवें रस के रूप में मान्यता दी गई है। "भक्ति भक्त भगवन्त गुरु चतुर नाम वपु एक" में भक्ति को प्रथम में मान्यता दी गई है। भक्ति के बिना न तो कोई भक्त बन सकता है न भगवान् की प्रतिष्ठा की जा सकती है। और न गुरु का महत्व प्रतिपादित किया जा सकता है। भक्ति का आधार सेवा है। बिना सेवा के भक्ति भी अधूरी है। वैसे ही भज सेवायाम् धातु से भक्ति शब्द की रचना हुई है। यह भक्ति भी माता ही है। मातृत्त्व जीवन प्रक्रिया में सर्वव्यापक है। माता नारी ही होती है। व्याकरण ने नारी की व्याख्या करते हुए लिखा है 'नरस्य धर्म्या नारी' अर्थात् नर के लिए नारी धर्म्या धर्म के समान ग्राह्य पवित्र मानी गई है। नारी की लोक जीवन में अनेकों रूपों में पूजा करते हैं। कन्या के रूप में पूजते हैं। माता के रूप में पूजते हैं और रक्षाबंधन और भाईदूज पर बहिन के रूप में पूजते हैं। अपने सभी रूपों में वह नर को निश्छल, निर्व्याज, अमोघ, आशीर्वाद ही देती आ रही है।

आज के पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित भारत ने नारी को जिस घृणास्पद रूप में प्रतिष्ठित किया है, यह चिन्ता का विषय है। ध्यान रहे द्रौपदी के चीरहरण ने महाभारत युद्ध को जन्म दिया और सती सीता के अपहरण ने राम-रावण युद्ध को जन्म दिया, जो संसार के इतिहास में अद्वितीय युद्ध थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि नारी का अपमान अर्थात् माता का अपमान हमें विनाश की ओर ले जा रहा है। हमें सावधान होना है, और वह आचरण करना है जिससे माता का (नारी का) सम्मान बढ़े, और भारत के उत्तराधिकारी होने के नाते भारत की परम्परा को सम्मान देने के लिए प्रतिबद्ध हों, संकल्पशील बनें और "मातृदेवो भव" के आदेश का अक्षरशः पालन करें।

सनातन धर्म के द्वारा जाति भेद का प्रकाश

● गुरुवर पं. श्री रामानुज जी शास्त्री

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चार प्रधान वर्ण है। ब्राह्मण में भी अनेकों भेद हैं। इसी तरह क्षत्री, वैश्य एवं शूद्रों में भी अनेक भेद हैं। ये सब भेद गोत्र के प्रवर्तक पूर्व पुरुषों के स्वभाव प्रभाव के अनुसार हुए हैं। जाति का अर्थ होता है 'उत्पत्ति'। जैसे आम का बीज बोयेंगे तो उससे आम के वृक्ष की जाति या उत्पत्ति होगी अन्य किसी वृक्ष की नहीं। अनार के बीज से अनार के वृक्ष की जाति उत्पत्ति होगी अन्य किसी वृक्ष की नहीं। इसी प्रकार अन्न के विभिन्न तत्तद् बीजों से तत्तद् वृक्षों की जाति-उत्पत्ति होती है अन्य वृक्षों की नहीं।

समस्त बीजों का आधार एक ही पृथ्वी है परन्तु वृक्षों की कोई संख्या नहीं है। एक पृथ्वी पर एक ही वृक्ष होना चाहिए विभिन्न वृक्ष क्यों होते हैं। इसमें कारण यह है कि उन समस्त बीजों को धारण करने वाली पृथ्वी केवल आधार मात्र है। उन बीजों के उत्पादक, सम्बर्द्धक तथा संरक्षक जल, वायु, आकाश, तथा अग्नि-पृथ्वी के सहित ये पाँच तत्त्व हैं जो पञ्च महाभूत कहलाते हैं। ये ही सबके धारक, पोषक संरक्षक तथा सम्बर्धक हैं।

बीज के प्रभाव की प्रवलता से एक ही पञ्चमहाभूतों ये पुष्ट होते हुए ये विभिन्न वृक्ष दिखाई पड़ते हैं। इनमें बीज प्रबल होता है। आधार तथा पोषक वर्ग केवल धारक तथा पोषक मात्र ही है। बीज इतना प्रवल है कि इसके अनुरूप गुण को कोई किसी भी प्रकार से बदल नहीं सकता है। इन वृक्षों की हजारों जातियाँ हैं। हजारों उनके रूप-गुण, स्वभाव, प्रभाव हैं।

इसी प्रकार मानव जाति में भी बीज की प्रधानता से विभिन्न जातियाँ दिखती हैं। आम का फल पक जाने पर अत्यन्त मधुर होता है। उसके बीज में डालियों तथा पत्तों में वह रस नहीं है जो फल में है। उस फल को पृथ्वी पर नहीं बोया जाता उसकी गुठली को ही वोया जाता है। गुठली में फल का कोई भी गुण न होकर कषाय (कडुआ) होता है परन्तु उसी बीज से वृक्ष होता है और उसमें जो फल होता है, वह अत्यन्त मधुर तथा गुणकारक होता है। आम के बीज से वृक्ष और वृक्ष से फल हुए। बीज से वृक्ष की ओर वृक्ष से बीज की परम्परा को ही जाति कहते हैं।

वस्तुतः बीज में ही वृक्ष का पूरा संस्कार सूक्ष्म रूप से रहता है। अमरुद का बीज बोने पर अमरुद का ही वृक्ष उगेगा। अनार या अन्य किसी प्रकार का वृक्ष नहीं उगेगा। संस्कार कितना बलवान है कि जिस वृक्ष का बीज होता है, वही वृक्ष उस बीज में से उत्पन्न होता है। कोई-2 वृक्ष अपनी डाल में से ही उत्पन्न हो जाते हैं। जैसे-कलम बाँधते हैं तो एक टहनी को दूसरी टहनी से मिलाकर मिट्टी देकर दूसरी टहनी से बाँध देते हैं। कुछ दिन के बाद दोनों टहनियाँ एक हो जाती हैं दोनों टहनियों को नीचे से काटकर जब पृथ्वी पर उसका आरोपणकर देते हैं तो वही कलमी आम कहलाता है। उसमें टहनियों के संस्कार से आम का फल ही लगता है अन्य प्रकार का फल नहीं। इसके अतिरिक्त गुलाब का फल अथवा बेहाया का वृक्ष-ये अपनी डालियों से उत्पन्न होते हैं। बीज से इनकी उत्पत्ति नहीं देखी गई है। इनकी डालियाँ ही बीज का काम करती हैं। इस प्रकार बीज का संस्कार प्रत्यक्ष देखा जाता है। इसी प्रकार मनुष्य जाति में भी बीज के

संस्कारों से ही जाति की परम्परा चलती है। ब्राह्मण जाति से जो बालक उत्पन्न होगा वह ब्राह्मणत्व के संस्कार से सम्पन्न ब्राह्मण ही होगा। क्षत्रिय से उत्पन्न बालक क्षत्रिय के संस्कार से सम्पन्न ही उत्पन्न होगा। वैश्य से उत्पन्न वैश्य संस्कार से सम्पन्न बालक ही होगा, तथा शूद्र की संतति शूद्र के संस्कार से सम्पन्न ही होगी, यह प्रकृति का प्रबल नियम है। इसी को जाति कहते हैं। जाति माने उत्पत्ति, मानव जाति में विभिन्न जातियाँ है, सब एक सी नहीं हैं, विभिन्न जीवों के संस्कार भी विभिन्न होते हैं। और विभिन्न स्वभाव भी होते हैं। संस्कार तथा स्वभाव की विभिन्नता से उनके कर्म भी विभिन्न होते हैं। इसलिए जाति भी विभिन्न होती है।

ये जातियाँ परस्पर में वैमनस्य, विद्वेष तथा तिरस्कार के लिए नहीं होतीं। लोक-व्यवहार को सुचारु रूप से शान्ति पूर्वक जीवन-यात्रा के निर्वाह के लिए होती हैं। इनमें जहाँ बड़प्पन का अहंकार आ जाता है, वहीं पर दूसरों को हीन समझकर तिरस्कार की भावनाएं उत्पन्न होती हैं। इनके पीछे अनेक अनर्थ होने लगते हैं। इन जातियों की व्यवस्था सृष्टि के आरम्भ से चली आ रही है। इनमें परस्पर में स्नेह, सुख-दुख में समानता, तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार की मधुरता तथा सभी ईश्वर के अंश हैं, इसलिए किसी से वैर-विरोध न करते हुए परस्पर मिलकर सभी जातियों के मानव अपने-अपने कर्म को ठीक-ठीक सम्पन्न करते हुए इहलौकिक-पारलौकिक परम कल्याण को प्राप्त करें, इसी के लिए सनातन धर्म रुपी भगवान् भास्कर सृष्टि की विषमताओं को, विभिन्न जातियों को अपने प्रकाश से प्रकाशित करके मानव जाति को दिखलाते हैं। विषमताओं की रचना नहीं करते इसीलिए सनातन धर्म भगवान भास्कर हैं।

आजकल के लोग कहते हैं कि सनातन धर्म सङ्कीर्ण भावना तथा संकीर्ण विचार वाला है। ऐसी मान्यता मूर्खों की है। जिन्होंने कभी वेद, उपनिषद्, इतिहास, पुराण तथा धर्मशास्त्र आदि का न तो कभी गुरु मुख से अध्ययन किया है। न श्रवण किया है और नहीं कभी अवलोकन किया है, इसलिए उनकी मान्यता सर्वथा भ्रमपूर्ण है। सनातन धर्म जैसा उदार-सद्भावपूर्ण सहानुभूतिपूर्ण तथा प्राणि मात्र का कल्याण कारक कोई अन्य धर्म नहीं हो सकता। शास्त्रों में एकता की भावना से परिपूर्ण अनेकों श्लोक हैं, सूक्तियाँ हैं, जिनको आगे दिया जा रहा है। अन्य धर्म केवल अपनी जाति तथा अधिक से अधिक मनुष्य जाति-इनमें ही सहचारिता, सहानुभूति तथा प्रेम का आदेश दिया गया होगा। परन्तु सनातन धर्म में मनुष्य जाति से लेकर पशु-पक्षी, कीट-पतंग तक को अपनी आत्मा समझकर उनसे सर्वथा निर्वैर रहकर अपनी शक्ति के अनुसार अन्न से, चारा से उनका भी परिपोषण करते हुए उनके प्रति भी सहानुभूति पूर्ण व्यवहार का आदेश दिया गया है। समस्त प्राणियों के परम हित के लिए जो शिक्षा तथा साधन का प्रकाश वैदिक सनातन धर्म में है वह अन्यत्र किसी धर्म में नहीं दिखता है, वेदों से लेकर प्राकृत भाषा पर्यन्त सर्वलोक हितैषिता की शिक्षा तथा साधन उपलब्ध होता है। जिसको अत्यन्त संक्षिप्त करके नीचे दिया जाता है।

वेद—

दृतेदृगुं हमामित्रस्यमाचक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहञ्चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। शु0 यजु0

यतोयतः समीहसे ततोनोऽभयंकुरु।
शन्नः कुरुप्रजाब्भ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।

शु० यजु०

शन्नो मित्रः शंव्वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमाः।
शन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नेविव्वष्णुरुरुक्रमः।।

शु० यजु०

उपनिषद्—

''सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै।
तेजस्विनाऽवधीतमस्तु मा विद्विंषावहै।।''
ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किचिज्जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।
अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।
सर्व खलु इदं ब्रह्म नेह नानास्ति किञ्चन।
एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति इत्यादि।।

महाभारत—(इतिहास)

''श्रूयताम् धर्मं सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।''
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।
ईश्वरः सर्व भूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।।

पुराण—

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदताम्।
ध्यायन्तु भूतानि मिथः शिवं धिया।।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे।
आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी।।
अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

वा० रामायण—

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्।
न्यायेन धर्मेण मही महीशाः।।
रामोविग्रहवान् धर्मः सर्वभूत हिते रतः।
चारित्रेण च को युक्त : सर्व भूतेषु को हितः
विद्वान् कः कः समर्थश्च कश्चैकः प्रिय दर्शनः।।

रामचरित मानस—

**''उमा जे राम चरन रत, विगत काम मद क्रोध।
निज प्रभुमय देखहीं जगत केहि सन करहिं विरोधः।।''**

**''सिया राममय सब जग जानी।
करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी।।
पर हित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।
पर हित बस जिनके मन माहीं।
तिन कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।।
परहित लागि तजहिं जो देहीं।
संतत संत प्रशंसहिं तेहीं।।**

इत्यादि अनेकों सूक्तियाँ हैं। जो लोग कहते हैं कि सनातन धर्म संकीर्ण भावना तथा संकीर्ण विचार वाला है उन लोगों को परिश्रम पूर्वक शास्त्रों का अवलोकन करना चाहिए। एक सनातन धर्म ही ऐसा सार्वभौम तथा अत्यन्त उदार है कि मनुष्य से लेकर स्थावर जंगम समस्त प्राणियों का इहलौकिक पारलौकिक परम कल्याण का मार्ग दिखाता है।

**''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।''**

यहाँ सर्वे शब्द का अर्थ केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा वैदिक ही नहीं है, सर्वे शब्द का अर्थ हुआ वैदिक अवैदिक मनुष्य मात्र, केवल मनुष्य ही नहीं पशु पक्षी कीट पतंग लता, पता तृण आदि चराचर प्राणी सुखी रहें, निरोग रहें, परम मंगल को देखें, कोई भी प्राणी दुःख का भागी न हो, इतना उदार इतना दयावान तथा सहानुभूति से सम्पन्न सनातन धर्म को जो संकीर्ण भाव वाला बतलाते हैं वे अज्ञानी-मूढ़ नर पशु बार-बार धिक्कार के योग्य हैं। सनातन धर्म के अतिरिक्त कौन ऐसा धर्म है जो प्राणी मात्र का कल्याण चाहता हो, यह अपना है यह पराया है इस प्रकार की भावना क्षुद्रचित वालों की है। उदार

चरित वाले महापुरुषों के विचार तथा दृष्टि में सारी पृथ्वी ही अपना कुटुम्ब है, अपने कुटुम्ब की तरह सभी प्राणी भरणपोषण करने के योग्य हैं। इस प्रकार की उदार भावना से सम्पन्न सनातन धर्म की संकीर्ण भावना सम्पन्न मानने वाले मानव–मानव नहीं हैं उल्लुओं के समान हैं। सनातन धर्म को संकीर्ण भाव वाला मानने वाले उन नर पशुओं को बार–बार धिक्कार है। मैंने तो केवल एक दो ही प्रमाण दिये हैं, ग्रन्थ विस्तार के भय से। ऐसे हजारों प्रमाण हैं। परमार्थ की दृष्टि से देखिये तो जितने परोपकार परायण सनातन धर्मावलम्बी नहीं दिखते। सनातन धर्मी महापुरुषों के द्वारा अनेकों स्थलों पर निःशुल्क औषधालय अन्नक्षेत्र, प्याऊ, तथा मानव जाति के सुख एवं कल्याण के लिए अनेकों प्रकार के दान किए जाते हैं। शत्रु भी अपने घर पर भूखा आ जाए तो उसको अन्न जलसे तृप्त करके स्वागत करने का आदेश सनातन धर्म ही देता है। अतिथि के लिए, गौ के लिए, कुत्ता के लिए, कौए आदि पक्षियों के लिए चेंटा, चींटी आदि जीव जन्तुओं के लिए अन्न का ग्रास निकालना कौन सिखाता है? केवल सनातन धर्म ही सिखाता है। इस सत्य तथ्य को न देखकर जो केवल अपनी हठधर्मिता के कारण सनातन धर्म को संकीर्ण घृणास्पद बतलाते हैं वे मनुष्य नहीं हैं, वे पशुओं से भी गिरे हुए महानतम पतित हैं। सनातन धर्म में यज्ञ की परम्परा तथा प्रतिष्ठा है। सृष्टि के आरम्भ से यह परम्परा चली आ रही है।

''सह यज्ञाः प्रज्ञा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वं एष वोऽस्त्विष्ट कामधुक्।।
देवान् भावयतानेन ते देवाः भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।''

समस्त प्राणियों की सृष्टि करके ब्रह्मा जी ने कहा–कि हे प्रजाओ तुम लोगों के इह–लौकिक–पारलौकिक कल्याण के लिए इस यज्ञ का निर्माण किया है। यह यज्ञ तुम्हारी समस्त कामनाओं को पूर्णकरने वाला होगा। इन यज्ञों से तुम देवताओं की आराधना करो, तथा देवता जल वृष्टि के द्वारा अन्न इत्यादि उत्पन्न करें, इस तरह से एक दूसरे को आदर देते हुए तथा सहायता करते हुए इहलौकिक पारलौकिक कल्याण प्राप्त करोगे। अन्न से समस्त प्राणियों की रक्षा होती है। तथा मेघ के जल से अन्न की उपज होती है, यज्ञ से सन्तुष्ट देवता मेघ के रूप में यथेष्ट जल वृष्टि करते हैं। इस तरह से प्रजा का पालन होता है। यज्ञ ब्राह्मण ही करते हैं वैदिक विधि के द्वारा। परन्तु यज्ञ का फल जो जल की वर्षा है वह केवल ब्राह्मणों के खेत में ही नहीं होती, बल्कि वह जल सारी पृथ्वी पर बरसता है। उस जल से संसार के समस्त प्राणी तृप्त होते हैं। सबके जीवन की रक्षा होती है। इसीलिए शब्द कोष में जल को जीवन भी कहा गया है। ''जीवनं भुवनं वनम्।''

इस प्रकार सनातन धर्म ही परम उदार, परम व्यापक, परम विशाल हृदय वाला है। इतने बड़े विशाल धर्म की विश्व हितकारक धर्म को जो संकीर्ण बतलाते हैं वे मूर्तिमान पापी ही हैं। ऐसे पाप दृष्टि वाले मनुष्य को बार–बार धिक्कार है।

वर्तमान युग का मानव सत्य धर्म तथा न्याय का पक्षपाती नहीं है, अर्थ पिशाच है। अर्थ के लोभ में होकर बड़े से बड़े अनर्थ करने में किञ्चित् संकोच नहीं करता। यह निश्चित है कि सनातन धर्म के न रहने पर सृष्टि की स्थिति सत्ता भी नहीं रह पाएगी, क्योंकि कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य का साक्षात्कार जैसा सनातन धर्म से प्राप्त होता है, वैसा अन्य धर्म में नहीं।

प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व

श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की कोलकाता शाखा के व्यवस्था प्रमुख एवं इस पत्रिका के सह सम्पादक पं. बिष्णु पाठक के परम आदरणीय दिवंगत पिता श्री के प्रति लिखते हुए मुझे गौरव की अनुभूति हो रही है।

धर्म के प्रति पूर्ण आस्था, सन्तों के प्रति श्रद्धा, सत्संग में रुचि एवं कर्म के प्रति सर्मपण, इन विशेषणों के पर्याय रहे हैं स्व. दुर्गा दत्त जी पाठक। 81 वर्ष की उम्र में विगत 10 नवम्बर 2009 में आपका देहावसान हुआ। सिंघाणा, राजस्थान में जन्मे स्व. पाठक जी का कर्म क्षेत्र भागलपुर, बिहार रहा है।

जैसा कि श्री बिष्णु पाठक जी ने मुझे बताया कि उनके पिता जी अपने भाइयों में सबसे छोटे थे। सबसे बड़े ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुविद् पं. मन्नालाल जी पाठक अभी भी भागलपुर विराजते हैं एवं उस प्रान्त के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों में गिने जाते हैं तथा आयुर्वेदाचार्य एवं ज्योतिर्विद पं. मातृ दत्त पाठक (G.A.M.S Gold Medalist) उनके मँझले भाई हैं जो मधेपुरा विराजते हैं जिनकी गिनती श्रेष्ठ वैद्यों में होती है।

ये अलग बात है कि स्व. दुर्गा दत्तजी पाठक अपने दोनों अग्रजों के विपरीत कभी विद्यालय नहीं गए, अपितु वे काशीदाकारी (Embroider) के कार्य में विलक्षण अनुभव रखते थे। कर्म को उन्होंने विशिष्ट दर्जा दे रखा था तथा हमेशा स्पष्ट वादिता में विश्वास रखते थे। 2008 एवं 2009 मार्च में श्रीधाम वृन्दावन, फोगला आश्रम में हमारे द्वारा दो भागवत कथाओं का विशाल आयोजन स्व. पाठक जी के निर्देश पर उनके सुपुत्र चि. बिष्णु पाठक जी ने कराया।

दोनों आयोजन अभूतपूर्व एवं विशाल थे तथा संस्कार चैनल पर दोनों आयोजनों का प्रसारण हुआ। जिसका लाभ देश-विदेश के करोड़ों भागवत प्रेमी भक्तों ने लिया।

स्व. पाठक जी ने आजीवन गौ पालन किया एवं धर्म में रुचि रखी, उनके समस्त परिवार के प्रति मेरी मंगल कामना-

शुभ कामनाओं सहित
कृष्णचन्द्र शास्त्री

जन्मदिन किसी भी मनुष्य के जीवन का वह अनमोल एकमात्र दिन है, जब वह रोया था और उसकी माँ मुस्करायी थी। फिर बाकी पूरे जीवन में कोई दिन ऐसा नहीं आता जब बच्चे के रोने पर या केवल दुखी होने पर भी माँ मुस्कराती हो। अर्थात्
बच्चे के दुखी होने पर वह उससे भी अधिक दुखी और प्रसन्न होने पर उससे भी अधिक प्रसन्न होती है।

नित्य कर्म के कुछ आवश्यक मन्त्र

कराग्रे वसते लक्ष्मी, करमध्ये च सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा, प्रभाते करदर्शनम्।।
प्रातःकाल यह मन्त्र पढ़कर अपने हाथों के दर्शन करना अति शुभ है।

• • •

समुद्र वसने देवी, पर्वत स्तन मण्डले।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।
इस मन्त्र को पढ़कर सवेरे धरती माता को प्रणाम करना हितकारी है।

• • •

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते।।
इस मन्त्र से भगवान् सूर्य का नमन करने से घर में धन की वृद्धि होती है।

• • •

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं, ब्रह्म कर्म समाधिना।।
भोजन से पहले इस मन्त्र का पाठ हमारी बुद्धि और तेज को बढ़ाता है।

• • •

दीप ज्योतिः पर ब्रह्म, दीप ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं, दीप ज्योतिर्नमोऽस्तुते।।
दीप जलाकर इस मन्त्र का पाठ हमारे पापों का नाश करता है।

• • •

अच्युतानन्तगोविन्द नामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।
इस मन्त्र के जाप से रोगों का नाश हो जाता है।

• • •

सर्व बाधा प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याऽखिलेश्वरी।
एवमेव त्वया कार्यामस्मद्वैरि विनाशनम्।।
हर प्रकार की बाधा नाश करने में यह मन्त्र बहुत प्रभावी है।

• • •

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणंगतः।।
सन्तान के इच्छुक दम्पत्ति इस मन्त्र का जप करें तो सन्तान की प्राप्ति होगी।

• • •

सरस्वति महाभागे, वरदे कामरूपिणी।
विश्वरूपि विशालाक्षी, देहि विद्या परमेश्वरी।।
विद्या प्राप्ति के लिए इस मन्त्र का जाप लाभकारी है।

• • •

या देवी सर्व भूतेषु शान्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
इस मन्त्र के जाप से घर में सदैव शान्ति रहती है। कलह समाप्त होता है।

• • •

आपदामपहर्तारं, दातारं सर्व सम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं, भूयो भूयो नमाम्यहम्।।
इस मन्त्र के पाठ से भगवान् श्रीराम आपत्तियों का नाश करते हैं और धन सम्पदा देते हैं।

• • •

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः।।
रात्रि में सोने से पहले इस मन्त्र को पढ़ने से भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से सारे क्लेशों (दुःखों) का नाश होता है।

• • •

धन्या ब्रज वसुन्धरा

● श्री सौरभ गौड़, अध्यक्ष-विश्व हिन्दू परिषद, वृन्दावन

मन्दिर श्रीगोविन्ददेव

श्रीगोविन्ददेव जी का मन्दिर वृन्दावन में सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं पहला मन्दिर है। लालपत्थर के बने प्राचीनतम मन्दिरों में यह सबसे पुराना है। उत्तर भारतीय स्थापत्य–शैली की सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति है यह। बहुत ऊँची कुर्सी पर बने इस भव्यभवन के प्रवेश द्वार के दोनों तरफ लगभग १० फुट मोटी दीवारें, मनोरम पाषाणस्तम्भ, बीच में जगमोहन, सभामण्डप तथा गर्भगृह, फिर उस पर बनी छत्री की शोभा दर्शकों को आश्चर्य में डाल देती है।

वर्त्तमान जो रूप–रेखा इस मन्दिर की हम देखते हैं, यवन औरंगजेब के अत्याचार एवं क्रूरता की साक्षी दे रही भग्न अवस्था है। इसके ऊपर की मंजिल को तोड़ फोड़ दिया गया था उसके शासन काल में। पूरे आकाश–चुम्बी इस मन्दिर का निर्माण गौड़ीय गोस्वामी श्रीरघुनाथ भट्ट के शिष्य जयपुर नरेश श्रीमानसिंह ने संवत् १६४७ में कराया था। आततायी–यवनों के मन्दिर को तोड़ने फोड़ने एवं भ्रष्ट करने से पहले ही राजा श्रीमानसिंह के राजमहल के अन्तरंग भवन मन्दिर में श्रीविग्रहों को ले जाकर सुरक्षित एवं प्रतिष्ठित कर दिया गया था, वे श्रीविग्रह आज भी वहाँ जयपुर में गौड़ीय वैष्णव गोस्वामी के द्वारा सेवित हैं। संवत् १८७७ में पुनः बंगाल के भक्त श्रीनन्द कुमार वसु ने श्रीगोविन्ददेव के नये मन्दिर का निर्माण कराया। उसमें श्रीगोविन्ददेव के प्रतिभू श्रीविग्रह स्थापित किये गये। श्रीविग्रह उस निकट–वर्ती नये मन्दिर में आज भी विराजमान हैं। और मन्दिर गोविन्द देव मंदिर नाम से प्रसिद्ध है।

मन्दिर श्रीमीराबाई

गोविन्द बाग मुहल्ले में यह मन्दिर है जो "मीराबाई के मन्दिर" नाम से प्रसिद्ध है। लोई बाजार से गोविन्द बाग का मार्ग है। एक रास्ता शाहजी मन्दिर की बायीं बगल वाली गली से है जो अति निकट है और इसी के किनारे पर मन्दिर बना हुआ है। बीकानेर की ठकुरानी साहिबा लक्ष्मी बाई ने संवत् १८६८ में इस मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। बाहर से दीखने में छोटा लगता है। अन्दर अति सुन्दर देवालय है सेवायतों के निवास स्थान हैं। जिसमें श्रीकृष्ण और उनकी वाम दिशा में श्रीराधाजी के साथ श्रीमीरा जी की मूर्ति भी विराजमान है। नीचे श्रीराधामनोहर जी की उत्सव मूर्ति प्रतिष्ठित है। सुन्दर मनोहर श्रीविग्रह दर्शनीय हैं। जिस स्थान पर यह मन्दिर बना हुआ है, निश्चय ही यह वह स्थल है जहाँ श्रीमीराबाई ने वृन्दावन आने पर श्रीपाद जीव गोस्वामी के दर्शन प्राप्त किये। कुछ दिन यहाँ रहकर श्रीमीराबाई ने श्रीगोस्वामिपाद की कृपा प्राप्त की। उसके फल स्वरूप उन्हें श्रीगिरधर ने अपने कलिपावन श्रीगौरकृष्ण स्वरूप के दर्शन कराये।

मन्दिर श्रीशाहजी

मीरा जी के मन्दिर के निकट अति प्रसिद्ध 'शाहजी का मन्दिर' है। टेढ़े खम्भों वाला मन्दिर भी इसे कहते हैं। वास्तव में इसका नाम है 'ललित–कुंज' इसका निर्माण संवत् १६१७ में श्रीललितकिशोरी तथा श्रीललित माधुरी जी ने आरम्भ कराया। निरन्तर आठ वर्ष में उस समय

लगभग दस–बारह लाख की लागत से यह तैयार हुआ। संवत् १६२५ में श्रीश्रीराधारमण जी के श्रीविग्रह को बड़े समारोह के साथ इस मन्दिर में प्रतिष्ठित किया गया।

इसका प्रवेशद्वार अति विशाल है जो लाल पत्थर का बना हुआ है। इसके आगे विशाल चौंतरा सा है। इस द्वार का नाम है 'चन्द्रपोल द्वार' भीतर प्रवेश करने पर एक विशाल बगीचा है।

कुछ एक सीढ़ियाँ चढ़कर मन्दिर प्रांगण आरम्भ होता है, जिसमें संगमरमर का सुन्दर फर्श, फव्वारे तथा तिवारियाँ, संगमरमर सिंहों के प्रतीक शोभित हैं। निजमन्दिर के बाहर विशाल बरामदा है जिसमें शुभ्र संगमरमर के टेढ़े बलदार कई विशाल खम्भे हैं जो अपनी कलाकृति के लिए देशी–विदेशी पर्यटकों के चित्त को आश्चर्य में डाल देते हैं।

निजमन्दिर के बाहरी भाग में विशाल कमरा है जिसमें अनेक रंगों के झाड़–फानूस हैं और दीवारों पर सौन्दर्य–पूर्ण सखियों के चित्र खचित हैं। मन्दिर का एक विभाग 'बसन्ती–कमरा' के नाम से प्रसिद्ध है। जिसकी मुगल–कालीन सौन्दर्य सज्जा देखते ही बनती है। यह कमरा वर्ष में दो बार बसन्त–पंचमी और श्रावण–त्रयोदशी के अवसर पर खुलता है।

स्थापत्यकला की दृष्टि हो या निर्माण–कर्त्ताओं की ललित भावनाओं की दृष्टि हो, यह मन्दिर दर्शनीय है।

मन्दिर श्रीगोपीश्वर महादेव

श्रीवृन्दावन में वंशीवट मार्ग पर यह मन्दिर अति प्रसिद्ध है, इसमें श्रीमहादेव जी अपने परिकर श्रीपार्वती, श्रीगणेश, श्रीनन्दीश्वर आदि के साथ विराजमान हैं। अति विशाल शिवलिंग जब स्वर्णवर्ण मय त्रिनेत्रात्मक कवच तथा पुष्प, धतूरा, बिल्वपत्र से सुसज्जित या शृंगारित किया जाता है, तो साक्षात् श्रीशिव का साक्षात्कार होता है।

श्रीगोपीश्वर महादेव जी का मन्दिर प्रसिद्ध एवं पुरातन है। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार लगभग ५० वर्ष पहले कराया गया था। फाल्गुन मास की शिव चतुर्दशी (महाशिवरात्रि) के अवसर पर इस मन्दिर में एक बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है, देवों के देव महादेव शंकर को श्रीमद्भागवत में परम वैष्णव बतलाया गया है। एकबार श्रीकृष्ण की रासलीला के दर्शनों की अभिलाषा से वे सीधे कैलाश पर्वत से श्रीधाम वृन्दावन पधारे जहाँ वंशीवट में महारास चल रहा था। वृन्दावन के बाहर ही गोपी–परिचारिकाओं ने उन्हें रोक दिया और बताया कि श्रीकृष्ण के अलावा किसी अन्य पुरुष का महारास क्षेत्र में प्रवेश निषेध है, तब भोलेनाथ ने परम सुन्दरी गोपी का रूप धारण कर महारास लीला में प्रवेश किया। रासविहारी भगवान श्रीकृष्ण ने भोलेनाथ को गोपीरूप में भी पहचान लिया और बोले 'आओ गोपीश्वर'। कहना था योगेश्वर मुँह से निकला गोपीश्वर। भोलेनाथ को वहीं विराजमान कर वरदान दिया कि बिना तुम्हारी कृपा के कोई भी भक्त इस वृन्दावन में विशेषकर मेरी मधुर लीलाओं में प्रवेश नहीं कर सकता। आप जब भी वृन्दावन पधारें तो श्रीगोपीश्वर महादेव के दर्शन अवश्य करें।

श्रीसुदामा–कुटी

वृन्दावन के यमुना तट पर श्रीसुदामा कुटी नाम का विशाल आश्रम है। जहाँ श्रीश्रीसीताराम–

परिवार के अति आकर्षक दर्शन हैं। साधु–सेवा का विशाल आयोजन प्रतिदिन यहाँ होता है। श्रीरासलीला, श्रीरामलीला तथा कीर्तन समय–समय पर अनुष्ठित होते हैं। श्रीरामानन्द पुस्तकालय की स्थापना इस स्थान पर है। इसके संचालक हैं श्रीसुदामादास जी। वे यथा नाम तथा गुण महापुरुष हैं। सन्त समाज का हर समय दर्शन यहाँ उपलब्ध होता है। आजकल यहाँ के महंत श्री सुतीक्ष्ण दास जी महाराज हैं।

श्रीलालाबाबू मन्दिर

श्रीगोदाविहार की बायीं ओर कोने पर या श्रीरंगजी मन्दिर के निकट पश्चिम की ओर यह मन्दिर अवस्थित है। उसमें नयनाभिराम श्यामसुन्दर श्रीमुरलीधर श्रीकृष्णचन्द्र, श्रीराधारानी के साथ विराजमान हैं। मनुष्यायत विशाल श्रीविग्रहों के दर्शन हैं तथा श्रीश्रीनित्यानन्द–गौरसुन्दर के रमणीय श्रीविग्रह सेवित हैं इसमें। ऊँची–ऊँची भव्य प्रस्तर की दीवारों से घिरा हुआ यह विशाल मन्दिर श्रीगौड़ीय–वैष्णवों के तीव्र वैराग्य एवं महान् भजनादर्श की धरोहर है।

इस मन्दिर का निर्माण कार्य संवत् १८६७ (सन् १७१०) के लगभग सम्पन्न हुआ। इसके केन्द्रीय भाग में बहुत बड़ा प्रांगण है। शिखर के ऊपरी स्तरों की एकसारता इस मन्दिर की एक अपनी विशेषता है।

इस मन्दिर के निर्माता तथा प्रतिष्ठाता थे मुर्शिदाबाद–निवासी बाबू मुरलीमोहन जी की कुलपरम्परा में जन्म लेने वाले परम वैष्णव बाबू कृष्णचन्द्रसिंह। इनके पिताश्री का नाम था श्रीप्राणकृष्ण तथा दादाश्री थे श्रीगंगागोविन्दसिंह, जो अँग्रेजों के शासनकाल में बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के सबसे बड़े दीवान होने के कारण बहुत बड़े रईस, धनी, जमींदार थे। श्रीगंगागोविन्द अपने दो पुत्र के घर इकलौते पौत्र श्रीकृष्णचन्द्र को प्यार से 'लाला' कहकर बुलाते थे एवं बन्धु–बान्धव "लालाबाबू"। इसलिए व्रजमण्डल में आने पर यह 'लालाबाबू' नाम से विख्यात हुए। इन्हीं के इस नाम पर यह मन्दिर 'श्रीलाला–बाबू' का मन्दिर पुकारा जाता है।

श्रीकात्यायनीदेवी–मन्दिर (पीठ)

श्रीरंगनाथ जी के सुप्रसिद्ध बगीचे के सामने एक खुला मैदान है, जहाँ रथ के मेले के अन्त में आतिशबाजी का प्रदर्शन होता है। उसकी बाँयी ओर से जाने वाला रास्ता श्रीराधाबाग में जाता है। उसमें श्रीकात्यायनीदेवी की पीठ स्थापित है। इसे परम विरक्त महात्मा श्रीकेशवानन्द जी ने स्थापित किया था। यह पीठस्थल बहुत बड़े भूमिभाग के बीच में निर्मित है। श्रीकात्यायनीदेवी का अति रमणीक मन्दिर शोभित है। उसमें अष्टधातु निर्मित शक्तिप्रतिमा विराजमान है, जो अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक है। प्रतिदिन विधि–विधान सहित श्रीकात्यायनीदेवी की पूजा–अर्चा होती है। नवरात्रों में विशेष उपचारों से उत्सव मनाया जाता है। वर्तमानकाल में इस पीठ की व्यवस्था महन्त श्रीविद्यानन्द जी करते हैं।

श्रीजी का मन्दिर

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य जी महाराज के नाम से सबसे बड़ा मन्दिर होने के कारण यह विशाल मन्दिर 'श्रीजी मन्दिर' के नाम से प्रसिद्ध है। अति प्राचीन स्थान है। सन् १८२६ में जयपुर महाराज जगत्सिंह की रानी आनन्द कुमारी देवी

ने इस मन्दिर का जीर्णोद्धार किया। श्रीआनन्द–मनोहर तथा 'श्रीवृन्दावनचन्द्र' श्रीविग्रहों को प्रतिष्ठित किया। मन्दिर की व्यवस्था श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्यों द्वारा की जाती है। यहाँ निम्बार्क सम्प्रदाय का विशाल ग्रन्थ भण्डार भी है। वर्तमान में परमपूज्य जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज यहाँ की गद्दी पर विराजमान हैं।

मुंगेर वाला मन्दिर

गौड़ीय मठ से आगे मथुरा रोड पर दाहिनी ओर विशाल मिर्जापुर वाली धर्मशाला है। उससे लगा हुआ एक मन्दिर है, जिसे 'मुंगेर वाला मन्दिर' कहते हैं। मुंगेर के महाराज श्रीरघुनाथ सिंह जी ने इस मन्दिर का निर्माण कराया था। दीखने में छोटा लगता है, किन्तु है अति सुन्दर और आकर्षक। प्रांगण में एक रमणीक बगीचा है। मध्य में एक विशाल चबूतरा है जिस पर श्रीदेव मन्दिर निर्मित है। श्रीश्रीराधाकृष्ण के अति मनोहर श्रीविग्रह इस मन्दिर में प्रतिष्ठित और सेवित हैं।

मन्दिर श्रीरामकृष्णदेव

मथुरा रोड पर मुंगेरवाले मन्दिर के सामने श्रीरामकृष्णदेव का सुन्दर मन्दिर है। स्वामी श्रीविवेकानन्द जी के नाम से कौन अपरिचित है? इन्होंने भारत में आज से लगभग १०० वर्ष पहले नगर–नगर में घूम कर अध्यात्म–विद्या का प्रचार किया। वे एक ऐसी विभूति थे जिन्होंने अपनी विद्वत्ता और तार्किक शक्ति से अमरीका पर बौद्धिक और आध्यात्मिक विजय प्राप्त की थी। उन्हीं स्वामी श्रीविवेकानन्दजी के गुरुदेव परमहंस स्वामी श्रीरामकृष्णदेव की इस मन्दिर में प्रतिष्ठा है।

जयपुर वाला मन्दिर

मथुरा रोड पर ही जमाई ठाकुर मन्दिर के सामने सड़क की दायीं ओर जयपुर वाला मन्दिर प्रसिद्ध है। जयपुर के महाराज श्रीमाधवसिंह जी ने अपने गुरुदेव ब्रह्मचारी श्रीगिरिधारी शरण जी की प्रेरणा से इस भव्य मन्दिर का निर्माण संवत् १९८१ में कराया। तीस वर्ष में यह मन्दिर बन कर तैयार हुआ। मूल मन्दिर में तीन विभाग हैं। एक में श्रीआनन्द विहारी जी, बीच में श्रीराधामाधव जी तथा बगल में श्रीनृत्यगोपाल जी श्रीगिरिधारी जी, श्रीसनकादिक तथा श्रीनारद जी के श्रीविग्रह प्रतिष्ठित हैं। बहुत बड़े भूखण्ड के बीच में समस्त मन्दिर पत्थर का बना हुआ है। श्रीनिम्बार्क–सम्प्रदाय–पद्धति से सेवा–पूजा की व्यवस्था है।

श्रीआनन्दमयी माँ आश्रम

मानव–सेवा संघ के साथ धार्मिक जगत् की विभूति श्रीआनन्दमयी माँ का लम्बा–चौड़ा आश्रम है। देश भर में माँ के द्वारा अनेक आश्रमों की स्थापना की गयी है, मुख्य प्रवेश द्वार के सामने एक रमणीय मन्दिर है, जिसके तीन कक्ष हैं। आगे विशाल बरामदा है। बीच में श्रीमन्महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्य–श्री नित्यानन्दप्रभु विराजमान हैं। उनके दायीं ओर श्रीश्रीराधाकृष्ण का और बायीं ओर श्रीशिवजी का मन्दिर है। तीनों मन्दिरों में विधिवत् पूजा, भोग–राग चलता है। पूज्य श्री हरिबाबा जी प्रायः इस आश्रम में निवास करते थे। कहा जाता है भारत की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी माँ आनन्दमयी की शिष्या थीं। उनके साथ–साथ अन्य उच्च राजनेता भी यहाँ आते थे और माँ का आशीर्वाद प्राप्त करते थे।

वास्तु
एक दृष्टि में

साधारणतः वास्तु विज्ञान को किसी पुस्तक या लेख में समा देना लगभग असम्भव है। अपितु इस लेख के माध्यम से ये बताने का प्रयास अवश्य किया गया है कि अपने घर और व्यापारिक स्थल में क्या सावधानी बरत सकते हैं।

घर में :

1) पूर्वोत्तर (N/E) में शौचालय अथवा रसोई न हो।
2) पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण–पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
3) प्रमुख द्वार दक्षिण–पश्चिम (S/W) में न हो।
4) प्रधान शयनकक्ष दक्षिण–पूर्व (S/E) तथा पूर्वोत्तर में (N/E) न हो।
5) प्रधान शयनकक्ष दक्षिण–पश्चिम (S/W) में अथवा दक्षिण (S) में हो।
6) रसोई घर अग्नि कोण (S/E) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।
7) देव स्थान पूर्वोत्तर (N/E) अथवा पूर्व (East) में हों।
8) सीढ़ियाँ घड़ी नुमा (Clock wise) हों।
9) सारे प्रमुख द्वार (Clock wise) खुलें।
10) घर का प्रमुख द्वार उत्तर (N) या पूर्व (E) में हो।
11) शौचालय वायव्य कोण (N/W) में या पश्चिम (W) में हो।
12) जल स्थान, बोरिंग पूर्वोत्तर (N/E) में हो।
13) ओवर हेड टंकी दक्षिण–पश्चिम (S/W) में हो।
14) बहुमूल्य वस्तुएँ घर में दक्षिण–पश्चिम (S/W) में अलमारी अथवा तिजोरी में रखें।
15) सोते समय सिरहाना उत्तर (N) में कदापि न हो।

व्यावसायिक स्थल :

1) पूर्वाभिमुख तथा उत्तराभिमुख अर्थात् North Facing & East Facing द्वार ज्यादा उपयोगी है।
2) प्रधान (Head) का बैठने का स्थान दक्षिण पश्चिम (S/W) में होना चाहिए।
3) प्रयास रखें कि सारे कार्यकर्त्ता पूर्व (East) और उत्तर (North) की ओर मुँह करके बैठें।
4) नगदी हमेशा दक्षिण पश्चिम (S/W) में रखें।
5) Beam के नीचे न बैठें तथा यदि Beam हो तो Ceiling करा लें।
6) प्रयास रखें कि दक्षिण पश्चिम (S/W) थोड़ा ऊँचा हो।
7) व्यावसायिक स्थल के आगे कोई बड़ा पेड़ न हो।
8) व्यावसायिक स्थल का पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण–पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
9) मुनीम एवं प्रबन्धक इत्यादि पश्चिम में या दक्षिण में बैठें।
10) किसी भी हालत में शौचालय पूर्वोत्तर (N/E) में न हो (यह देव स्थान है)।
11) पीने का पानी पूर्वोत्तर (N/E) में रखें एवं पैन्ट्री (Pantry) अग्नि कोण (S/E) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।

उपरोक्त बातों में अनेकों अनेक पहलू अभी भी रह गये हैं। जब भी किसी नये घर या व्यावसायिक स्थल का चुनाव करना हो तो उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए भी विशेषज्ञ की सलाह अत्यन्त आवश्यक है।

12 राशियों का फल

● पं. विष्णु पाठक, कोलकाता

मेषादि १२ राशियों का वार्षिकफल संवत् (२०६७)

मेष (स्वामी–मंगल) – चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

दैनिक कार्यभार की चिन्ता बढ़ेगी। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। उत्तम ग्रहचाल से रुका हुआ कार्य बनेगा। भाग्य का सितारा चमकेगा। यात्रा लम्बी व साधारण होगी। यात्रा लाभदायक जानें। राजनीतिक सम्बन्धों से फायदा होगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करें। बढ़ते कारोबार से विशुद्ध लाभ अधिक होगा। पदाधिकार की चिन्ता अन्तर्विरोध को जन्म दे सकती है। नई योजना में ऊर्जा व पूँजी का निवेश होगा। धार्मिक सामाजिक कार्यों में मन लगा रहेगा। आप इच्छित उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। कठोर परिश्रम से रुका हुआ काम बन जायेगा। ललित कलाओं में रुझान बढ़ेगा। लेन देन में सावधानी बरतें। पदोन्नति में साथी रुकावट पैदा करेगा। पुराने ऋण से छुटकारा मिल जायेगा।

वृष (स्वामी–शुक्र) – इ, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

इस वर्ष का गोचर दिनमान दशापथ का प्रारूप विगत समय की अपेक्षा सुयोग प्रदायक एवं विषम गोचर गति का समापन तथा निर्मल सुखद सुयोग बनें। किसी परिचित से मनमुटाव हो सकता है। रुपये पैसे के लेन देन में सावधानी बरतें। सन्तान सुख मिलेगा। पुराने रोग से छुटकारा मिलेगा। काफी समय से टल रही योजनाएं पूरी होंगी। मकान, वाहन, पशु लेन देन में रुचि बनेगी। कहीं से अचानक शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। बिगड़ते परिवेश में पुराने सम्पर्क फायदा देंगे। वाहन चलाने में सावधानी बरतें। मंगलोत्सव, मिलन आमोद प्रमोद बढ़ेगा। लम्बी लाभकारी योजनाओं में निवेश होगा। आर्थिक चिन्ता से मुक्ति मिलेगी। व्यवसाय के क्षेत्र में नया मार्ग प्रसस्त होगा। आध्यात्मिक क्षेत्र में मन रमेगा। स्वास्थ्य सम्बंधी कोई नई परेशानी जन्म ले सकती है। सहपरिवारियों के पूर्ण सहयोग से नवनिर्माण का विचार पूरा होगा।

मिथुन (स्वामी–बुध) – का, की, कू, ङ, छ, के, को, हा, घ

चालू योजना कठिनाई से पूर्ण होगी। न चाहते हुए भी कहीं जाना होगा। किसी खास उपलब्धि से मन खुश होगा। सेहत पर मौसम का प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। प्रतियोगिता में जीत हो सकती है। नव निर्माण तथा देव दर्शन का विचार पूरा होगा। उन्नति की ओर प्रयासरत रहें समय अनुकूल है। दाम्पत्य वैमत्य परेशानी का कारण बनेगा। नवीन व्यवसाय, राजनीतिक गठजोड़ का सुयोग सुखद रहेगा। प्रगति पथ पर पूर्ण विश्वास से बढ़ें। उत्तरार्ध में योजना पूर्ति से लाभ किन्तु मनोमालिन्य भी सम्भव है। पुरानी निराशा छोड़कर नया प्रगति पथ मिलेगा। महत्वपूर्ण सफलता मिलने से हर्ष होगा। अधिक व्यय होने के साथ साथ लाभ के अवसर भी आयेंगे।

कर्क (स्वामी–चन्द्रमा) – ही, हू, हे, हो, डा, डी, डु, डे, डो

अचानक धन लाभ होगा। विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। सोचे हुए काम बन जायेंगे। यातायात के साधन सुलभ होंगे। स्वास्थ्य कुछ नरम चलेगा। अच्छा समाचार आयेगा। समाज में मान सम्मान बढ़ेगा। पूर्वापेक्षा लाभ अधिक होगा, अकस्मात व्यय का सामना करना पड़ सकता है। परिवार से अपेक्षित सहयोग मिलेगा। शत्रुजनित षड्यन्त्र लोकोपवाद से बचे रहें। अनावश्यक दुःश्चिन्ताओं से मन क्षुब्ध होगा। सामाजिक उत्तरदायित्व में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभानी पड़ सकती है। तुरन्त निर्णय अप्रत्याशित लाभ देगा। प्रतियोगिता में जीत आपकी होगी। नौकरी पेशा लोगों का श्रम संघर्ष बढ़ेगा। कानूनी झगड़ा सुलझ जायेगा। पुराने दोस्तों का सहयोग अपेक्षित है।

सिंह (स्वामी–सूर्य) – मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

विवादास्पद प्रकरण समाप्त होगा। ग्रहचाल का प्रभाव मध्यम रहेगा। कुचक्र रचना से बचें। परिवार में सरसता का वातावरण बनेगा। निम्नस्तरीय जन सम्पर्क से लाभ तो, उच्च अधिकारी से हानि सम्भव है। यात्रा मंगलोत्सव का संयोग बन सकता है। राज समाज में सम्मान बढ़ेगा। लम्बी यात्रा वाहन आदि का विचार पूरा होगा। जिम्मेदारियाँ भी बढ़ेगी। व्यापारी वर्ग को कुछ मुश्किलें आ सकती हैं। धार्मिक कार्यों में यश बढ़ेगा। नौकरी सम्बन्धी सूचना मिले। जमा खाता बढ़ेगा। सांसारिक सुख का साधन मिल सकता है। गोचर के शुभ प्रभाव से सफलता मिलेगी। लाभ के अवसर सामान्य हैं। खरीद फरोख्त के धंधे में मुनाफा होगा। धार्मिक सामाजिक काम से कहीं जाना होगा। किसी अनजान व्यक्ति से कुछ फायदा होगा।

कन्या (स्वामी–बुध) – टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

पुराने रोगों से छुटकारा मिलेगा। पारिवारिक खुशी का समाचार मिलेगा। सामाजिक सम्पर्क फायदेमन्द रहेंगे। लाटरी आदि का लाभ हो सकता है। लेन देन का विचार पूरा होगा। भौतिक विकास का योग अच्छा है। जुलाई मास के उत्तरार्ध में किसी समस्या का सामना कर पड़ सकता है। रुका हुआ धन कठिनाई से मिलेगा। लाभ हानि का समान योग है। प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। बड़े अधिकारी से सावधान रहें। पारिवारिक कठिनाइयों से गुजरना पड़ सकता है। देश देशान्तर से शुभ समाचार मिलेगा। घर गृहस्थी का विचार पूरा होगा। नवीन व्यवसाय राजनीतिक गठजोड़ का संयोग सुखद होगा। सरकारी लाभ की सम्भावना कम है। सुखोपयोग के साधन मिलेंगे। आय–व्यय का संतुलन बना रहेगा।

तुला (स्वामी–शुक्र) – रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

परम मित्र के सहयोग से नया काम बनेगा। व्यवसाय में तत्परता बनी रहेगी। रुका हुआ धन मिलेगा। आर्थिक मामले में सहयोग अपेक्षित रहेगा। गुप्त षड्यन्त्रकारी से सचेत रहें। सामाजिक धार्मिक कार्य से

कहीं जाना होगा। कुछ समय ज्ञानवर्धन में बीतेगा। अगस्त मास के पूर्वार्ध में योजना पूर्ति से लाभ होगा। उच्चाधिकारी से विवाद होने की संभावना है। चल रहे सम्यक् कार्यों में सजगता बरतें, पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। विद्युत उपकरण वाहन आदि चलाने में सावधानी बरतें। उत्तरदायित्व वृद्धि शुभ फलदायक है। प्रतियोगिता परिणाम सुखद रहेगा। संगीत साहित्य में रुचि बनेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

वृश्चिक (स्वामी–मंगल) – तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

ग्रहचाल भाग्य विकास में सहायक है। कार्यारम्भ करें समस्या का समाधान समय पर हो जायेगा। व्यावसायिक उन्नति से आत्म विश्वास में वृद्धि होगी। परिवार में सरसता का संयोग बनेगा। शत्रु नुकसान पहुँचाने की चेष्टा करेगा। जुलाई माह में नाम और दाम दोनों का लाभ होगा। लम्बी योजना का शुभारम्भ होगा। अगस्त में जन सम्पर्क अच्छा रहेगा। दोस्तों के साथ लम्बी यात्रा पर जाना पड़ सकता है। दीर्घकालीन विवाद समाप्त होगा। प्रतियोगिता में नम्बर मिलेगा। खरीद फरोख्त का धंधा पनपेगा। राजकीय सहयोग अपर्याप्त होगा। जनवरी में पढ़ाई व्यवसाय हेतु परदेश भ्रमण का लाभ मिल सकता है। स्वास्थ्य कुछ नरम चलेगा। कानूनी विवाद में नया मोड़ आयेगा। मार्च में नई योजनाएं पूरी होंगी। परिजनों से सहयोग मिलेगा।

धनु (स्वामी–गुरु) – ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ़ा, भे

नवीन कार्य की योजना मस्तिष्क में आकार लेगी। दोस्तों से मतभेद चल सकता है। जून मास शुभ फलदायक है। कानून सम्बन्धी विवाद में विजय मिलेगी। भूमि वाहन लेन–देन का सौदा पक्का होगा। स्थान परिवर्तन से लाभ होगा। जमा खाते में बढ़ोत्तरी होगी। नया मेल मिलाप लाभप्रद रहेगा। विचाराधीन काम देर से बनेगा। नई खोज में रुचि उत्पन्न होगी। अतीत के सन्दर्भ में अनुसंधान का लाभ होगा। नये लोगों से सम्बन्ध बनेंगे। रोजगार में पर्याप्त उन्नति होगी। गया हुआ धन मिलेगा। उच्च अधिकारी से टकराव सम्भव है। आमोद प्रमोद के साधन सुलभ होंगे। नवीन क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं बनेंगी। सत्कर्मजन्य पुण्य से अभीष्ट सिद्धि मिलेगी। राजनीतिक गतिविधियों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लें।

मकर (स्वामी–शनि) –भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

इष्टकृपा, संयम परित्वेन लाभ होगा। भाग्य का सितारा चमकेगा। रोग चिन्ता व मानसिक परेशानी रहेगी। पुराने मित्र मिलने पर खुशी होगी भूमि वाहन आदि लेनदेन का योग बनेगा। मन की उलझनों का समाधान प्रकृति स्वयं करेगी। लम्बी यात्रा से कष्ट संभव है। लाभ के अवसर मिलेंगे। विषय विशेष की विशेषज्ञता व्यक्तित्व विकास में सहायक है। अवरोध विरोध के चलते भी संकल्पित कार्य पूरे होंगे। अनावश्यक श्रम से परेशानी हो सकती है। अक्टूबर मास सामान्य फलदायक है। कारोबार में अनिश्चितता

बनी रहेगी। विरोधी परेशान कर सकता है। पारिवारिक कहा–सुनी मानसिक विक्षेप का कारण बनेगी। दाम्पत्य जीवन में सरसता बनेगी। आस्थावान पुरुषों का साथ नेष्ट रहेगा। निराशाजनक विचारों से बचे रहें, समय सानुकूल है।

कुम्भ (स्वामी–शनि) – गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अप्रैल मास की ग्रहचाल आपके अनुरूप रहेगी। मित्र सहयोग मिलेगा। चल अचल सम्पत्ति की खरीद फरोख्त में सावधानी बरतें। गोचर ग्रहानुसार लाभ की संभावना है। सामाजिक सम्पर्क से काम बनेगा। जुलाई मास में धन लाभ क़ा योग है। धर्म और अध्यात्म का मार्ग सुबुद्धि देगा। अवरोध विरोध के चलते संकल्पित कार्य समय पर पूरे होंगे। रचनात्मक कार्यों में लगाव होगा। गृहस्थी की समस्या सुलझ जायेगी। राजकीय मदद मिलेगी। अचानक लाभ मिल सकता है। पदाधिकार की चिन्ता अन्तर्विरोध को जन्म देगी। सफलता के मध्य असफलता के योग बन रहे हैं। व्यवसाय में उन्नति के अवसर न चूकें। विवेकपूर्ण कार्य संपादन से लाभ मिलेगा। मार्च मास में कारोबार में उन्नति होगी। स्वास्थ्य कुछ ढीला चलेगा। परस्पर मनोमालिन्य से बचे रहें।

मीन (स्वामी–गुरु) – दी, दू, थ, झ, त्र, दे, दो, चा, ची

वर्तमान में परिश्रम का फल भविष्य में मिलेगा। सेहत पर मौसम का प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। व्यवसायिक समझौता हो सकता है। ग्रहचाल के अनुसार स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। चिरस्थाई योजना में धन खर्च होगा। सत्प्रयत्न से मनोरथ सिद्ध होंगे। लम्बी योजनाओं में पूँजी खर्च होगी। कानूनी विवाद नया मोड़ लेगा। व्यवसाय में तत्परता बनी रहेगी। कार्यालय में अधिकारी से अनबन संभव है। विवेकपूर्ण कार्य संपादन से लाभ होगा। कानूनी एवं घर गृहस्थी की समस्या सुलझ जायेगी। धार्मिक विवाद में उलझना श्रेयस्कर नहीं है। सफलता के मध्य असफलता के योग बन रहे हैं। जन सम्पर्क संचार क्षेत्र में संभावनाएं तलाशें। रोजगार में उन्नति के अवसर चूकें नहीं। कारोबार में नया समझौता होगा। राजनीतिक सम्पर्क फायदा देंगे।

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽहमिति मां मत्वा क्षमस्व मधुसूदन।।
प्रतिज्ञा तव गोविन्द 'न मे भक्तः प्रणश्यति'।
इति संस्मृत्य संस्मृत्य प्राणान् संधारयाम्यहम्।।

हे नाथ! प्रारब्धवश मैं सहस्र योनियों में भी जिस–जिस योनि में देह धारण करूँ, उस–उस जन्म में आपके चरणों में मेरी अचला भक्ति बनी रहे। विषयी पुरुषों की जैसे केवल–मात्र विषयों में ही प्रीति रहती है, आपको स्मरण करते हुए वैसी प्रीति मेरे हृदय में सदा बनी रहे। अर्थात् मेरे मन से वह कभी दूर न हो।

गुरु बिन ज्ञान न होइ

● प्रस्तुति : श्रीकिशनलाल जी शास्त्री

★ समस्त दुराचारों, अनाचारों एवं पापों से बचने का एक मात्र उपाय सत्संग है। संसार से मुख–मोड़कर ले जाता है परमेश्वर की ओर सत्पुरुषों का संग।

★ भक्ति की प्राप्ति के लिए महत्पुरुषों की निर्हेतुक कृपा की बाट जोहते रहिए।

★ गुरु–उपदिष्ट साधनों का आचरण करते हुए उनकी कृपा पर भरोसा रखिए।

★ प्राणी मात्र के प्रति दया रखने से भगवत्–कृपा शीघ्र प्राप्त होती है। दैन्य–रहित साधन–भजन में दम्भ का उदय होता है। भक्तिपरायण मनुष्य में दैन्य का आना स्वाभाविक है।

★ दीनता के बिना प्रेम–भक्ति आविर्भूत नहीं होती। दीनता प्रेम–भक्ति की जननी है।

★ दूसरों में दोष दृष्टि करके किसी की निन्दा मत करो। सर्वदा अपने दोष देखो। जड़–जंगमात्मक समस्त जगत् परमात्मा का वैभव है।

★ परनिन्दा–रहित होकर जो एक बार 'श्रीहरिनाम' उच्चारण करता है, श्रीहरि बुलाकर उसका निस्तार करते हैं। भक्तों के चरणों पर दृष्टि रखने से श्रीभक्तिरानी के राज्य का पथ दीखता है।

★ भजन में जितने परिमाण में उत्कण्ठा बढ़ेगी, उतने परिमाण में तृप्ति कम होती जाएगी। तृप्ति क्षीण होने पर रुचि उत्कण्ठा की वृद्धि होती है।

★ भक्तों का संग ही भक्ति–उत्कण्ठा बढ़ाने का प्रधान उपाय है।

★ भक्तों की चरणधूलि से मलिन–चित्त मार्जित होता है। भक्तों तथा भगवान् से सम्बन्ध रखने वाले शास्त्र का नाम ''श्रीभागवत'' है। श्रीभगवान् के रूप–गुण–लीलादि वर्णन द्वारा शुद्ध भक्ति को प्रतिपादन करने वाले शास्त्र भी भागवत–शास्त्र हैं। भक्ति–शास्त्रों का पाठ करने से पहले उनके रचयिता का ध्यान एवं उनकी कृपा–प्रार्थना करनी चाहिए।

★ जो भक्तिरस के पात्र हैं वे 'भागवत' कहलाते हैं। शुद्ध भक्तिरस के पात्र वे हैं, जो धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष को त्यागकर केवल प्रेम–भक्ति को परम–पुरुषार्थ मानते हैं।

★ परम–पुरुषार्थ कृष्ण–प्रेम की दीक्षा–शिक्षा देने वाले भागवतजन ही वास्तव गुरु हैं। श्रीगुरु श्रीभगवान् के परम–प्रिय भक्त होने से श्रीभगवान् के समान पूजनीय हैं। श्रीभगवान् की अनुग्रह–शक्ति तथा गुरु–शक्ति की तादात्मता प्राप्त करने से वे भागवतजन 'गुरु' शब्द के वाच्य हैं। श्रीगुरु स्वरूपतः भक्त–तत्त्व हैं, उपास्य–तत्त्व केवल श्रीभगवान् ही हैं।

★ शास्त्र तथा युक्ति में निपुण और उपास्य–तत्त्व श्रीभगवान् में दृढ़–निष्ठ भक्त ही गुरु करने योग्य है।

★ अन्तर्यामी–परमात्मा भी समय–समय पर भलाई–बुराई का ज्ञान कराने वाले होने से जीव के गुरु माने जाते हैं। अन्तर्यामी परमात्मा साक्षात्–भाव से किसी जीव को शिक्षा नहीं देते। जीव को साक्षात् भाव से शिक्षा प्रदान करने के कारण परम भागवत गुरु का महत्व है।

★ गुरु–पादाश्रय के बिना अध्यात्म–पथ में चलना कर्णधार के बिना नौका की यात्रा है। श्रीगुरु द्वारा ही भजन की शिक्षा तथा अनुभूत योग प्राप्त होते हैं। शिक्षा–गुरु अनेक हो सकते हैं, किन्तु दीक्षा–गुरु एक होला है।

★ श्रीगुरु एवं शिष्य में आराध्य इष्टदेव तथा भावों की एकता होना अनिवार्य है। श्रीगुरुदेव से अपने दोषों का दुराव भजन को कभी शुद्ध नहीं होने देता। श्रीगुरुदेव से भजन की जिज्ञासा करना श्रेयस्कर है।

★ श्रीगुरु की सर्वतोभाव से सेवा द्वारा भगवत्–कृपा अति शीघ्र प्राप्त होती है।

★ गृहस्थ के लिए गृहस्थ एवं विरक्त के लिए विरक्त गुरु होने में शिष्य–गुरु सम्बन्ध का सम्यक् निर्वाह होता है। कृष्णतत्त्ववेत्ता ही गुरु करने योग्य है, चाहे वह किसी वर्णाश्रम का क्यों न हो।

★ शुद्ध सत्त्वोज्ज्वल चित्त–गुरु के आश्रय से भगवत्–साक्षात्कार होता है। केवल मन्त्र जानने के लिए गुरु का प्रयोजन नहीं बल्कि कृपा–प्राप्ति के लिए है। श्रीगुरु में दोष–दृष्टि अधःपतन का कारण है। श्रीगुरु के शास्त्रीय–वचन ही सदा पालनीय हैं, उनका आचरण अनुकरणीय नहीं।

★ श्रीहरिनाम–संकीर्त्तन सदा, सर्वदा, नित्य भगवत्–प्राप्ति का परम उपाय है। श्रीनाम–संकीर्त्तन चारों युगों में सर्वोपरि साधन और साध्य है। कलियुग में तो एक मात्र श्रीनाम–संकीर्त्तन सर्वश्रेष्ठ साध्य–साधन है। श्रीकृष्ण स्वयं कलि में श्रीनाम संकीर्त्तन करते हैं, अतः कलि में इसकी समधिक विशेषता है।

★ श्रीनाम–संकीर्त्तन से समस्त पाप नाश हो जाते हैं। जाने–अजाने श्रीनाम–संकीर्त्तन अपना फल प्रदान करता है। श्रीनाम–संकीर्त्तन किसी विधि–निषेध की अपेक्षा नहीं रखता। सर्वावस्था, सर्वकाल में श्रीनाम संकीर्त्तन किया जा सकता है।

★ श्रीनाम–संकीर्त्तन का आनुषंगिक फल है पाप–नाश। श्रीनाम संकीर्त्तन का मुख्य फल है कृष्णप्रेम, जो श्रीकृष्ण–प्राप्ति का मूल कारण है। अपराध–रहित होकर श्रीनाम–संकीर्त्तन करने से प्रेम की प्राप्ति होती है। श्रीनाम–संकीर्त्तन अपराधों का विचार करता है। अपराधी पुरुष में श्रीनाम संकीर्त्तन का मुख्य फल कृष्णप्रेम आविर्भूत नहीं होता।

★ श्रीनाम–संकीर्त्तन भक्ति के समस्त अंगों को पुष्ट करता है। श्रीनाम संकीर्त्तन कर्म, योग–ज्ञानादि साधनों का फल प्रदान करता है।

★ समस्त साधनों का फल प्रदान करने में श्रीनाम संकीर्त्तन निरपेक्ष एवं परम स्वतन्त्र है। किन्तु श्रीनाम–संकीर्त्तन के बिना कर्म–योग–ज्ञानादि अपना फल भी प्रदान करने में सक्षम नहीं हैं। श्रीनाम–संकीर्त्तन सकामी, मुमुक्षु एवं योगसिद्धि चाहने वालों का मनोभीष्ट पूर्ण करने में सर्व समर्थ है।

★ श्रीनाम–संकीर्त्तन का आभास मात्र मुक्ति देने वाला है।

★ श्रीनाम संकीर्त्तन प्राकृत–इन्द्रियों से ग्राह्य नहीं है। वह आश्रय लेने वाले की जिह्वा पर स्वतः करुणापूर्वक स्फुरित होता है। नियम पूर्वक श्रद्धासहित श्रीनाम संकीर्त्तन करने वाले मनुष्य के अधीन रहते हैं श्रीभगवान्।

• भक्ति भक्त भगवन्त गुरु से साभार

साधुता और अविद्या

● श्री विष्वक्सेनाचार्य जी, वृन्दावन

अतीत में बहुतों ने विद्या पढ़ना व्यर्थ समझा, क्योंकि उन्हें सीमित पैतृक सम्पत्ति से अधिक की अपेक्षा नहीं थी। बहुतों को बिना विद्या के ही धनार्जन के उपाय मिले थे। धनार्जन के सिवा विद्या का दूसरा उपयोग समझने वाले बहुत कम होते हैं। साधुओं में भी अनपढ़ों की संख्या बहुत है। जो पढ़े हैं वे भी यदि किसी माध्यम से धन पा रहे हैं तो वे भी विद्या से विमुख ही देखे जाते हैं। उनकी शिक्षा अधूरी हुई होती है। भले ही वे ज्ञानवाला कोई भी बड़ा पद ढो रहे हों। उनकी एक और विशेषता यह होती है कि वे छात्रों को वास्तव शिक्षा से विमुख रखने का षड्यन्त्र रचते रहते हैं। इस षड्यन्त्र को साधुता का कलंक न मानकर वे अपनी नीतिकुशलता मानते हैं। पढ़कर भी आत्मविद्या से उदासीन रह रहे ये लोग हृदय से कभी भी आत्मनिष्ठा नहीं चाहते बल्कि विद्या से अपना लगाव इतना ही रखते हैं जितना बाहर से धन पा रही नारियाँ अपने पति से। देश के पढ़े लिखे ज्यादा स्थानधारी या साधु ऐसे ही मिलते हैं। वह साधु तो मिलता ही नहीं जो स्वरूप ज्ञान अर्जित कर स्वयं को स्वरूप निष्ठ बनाने की साधना में लगा हो, जबकि मानव जीवन का यही प्रमुख प्रयोजन है। यही है माया की महिमा।

अभी हम साधुता और अशिक्षा में तालमेल का विचार कर रहे हैं। हम जानना चाहते हैं कि क्या साधुता के साथ अशिक्षा या अशिक्षा के साथ साधुता रह सकती है? पहली दृष्टि में तो यही जान पड़ता है कि शिक्षा के बिना साधुता ठहर नहीं सकती किन्तु फिर प्रश्न होता है कि वह कौन सी शिक्षा है जो साधुता का सहारा बनती है। यदि सम्प्रदाय की शिक्षा मानें तो सम्प्रदाय बहुत हैं जो एक दूसरे से पूरे विरुद्ध हैं। ऐसी स्थिति में यदि हम सबकी सुनें तो प्रत्येक सम्प्रदाय के अनुसार बाकी सारे गलत ठहरेंगे। वास्तव में किसी भी साधु को किसी भी सम्प्रदाय से ज्यादा नहीं बँधा रहना चाहिये। अच्छाई चाहे जहाँ भी हो वहाँ से उसे अतिशय आदर और उदार भाव से लेना चाहिये एवम् अपने सम्प्रदाय की उन बातों को ज्यादा नहीं उछालना चाहिये जो सर्वसाधारण को खलती हों। अपने सम्प्रदाय की उपेक्षा भी उसे नहीं करनी चाहिये। अवश्य ही एक मानव होने के नाते अपने विवेक को वह सर्वोपरि रखेगा। मर्यादा में रहकर ही कोई प्रगति कर सकता है। व्याकरण काव्य न्याय वेदान्त विद्याओं से सारे सम्प्रदायों के रहस्य समझ में आ जाते हैं। तब साधु अपने सम्प्रदाय के अर्थों को उक्त विद्याओं के घेरे में ही सम्हाल कर लेता है और उस घेरे से ही क्रम से ऊपर उठता हुआ परमपद तक पहुँच जाता है। ऐसी स्थिति में साधु को विद्यावान् ही होना चाहिये या किसी विद्यावान् सन्त की सेवा में रहना चाहिये। विद्यावान् वह होता है जो प्रतिदिन विद्याभ्यास में ही लगा रहता है, विद्या उसका एक बड़ा व्यसन होता है। वह व्यक्ति विद्यावान् नहीं माना जा सकता जो वृद्धावस्था में भी विद्याभ्यास से विमुख पाया जाता है। आज के आदर्श माने जा रहे शिक्षित साधु भी ऐसे नहीं मिल रहे हैं इसी से समाज में विद्याओं

का बहुत ह्रास हो चुका है। स्वयं को मध्यवय या अन्तिमवय में पा रहे प्रतिष्ठित अल्प शिक्षित सन्तों का प्रायश्चित्त रूप सामयिक कर्तव्य है कि छात्रों में धर्मभाव बढ़ाने वाली शिक्षा के लिये प्रोत्साहन पुरस्कारों की व्यापक योजनायें बनायें।

आज साधु शब्द भ्रामक हो गया है। साधु का माने ज्ञान और कर्मों के प्रति उदासीन समझा जाता है। एक उदासीन नाम का सम्प्रदाय भी है, वह स्वयं को संसार के प्रति उदासीन मानता है, गतिविधियों से उसकी उदासीनता की परख की जा सकती है। भगवद्गीता में मानव जीवन का पूरक कर्मयोग माना गया है, ज्ञान कर्म का पूरक है। भक्ति ज्ञान का परिणाम है। भक्तिपूर्वक किया हुआ छोटा सा कर्म भगवान् को प्रसन्न करके मोक्ष दिला देता है।

इससे साधु को वह भक्ति अर्जित करनी चाहिये जिससे भगवत्सेवामय कर्मों में तत्परता बढ़े। बिना ज्ञान के आयी भक्ति का भरोसा नहीं रहता, वह कभी भी पलट सकती है। साधुता की रक्षा विद्या से ही सम्भव है, अविद्या से उसका तालमेल नरक तक का द्वार बन जाता है।

समय ऐसा चल रहा है, मूर्ख जन अब सन्त हैं,
और मत पूछो अभी वे, बन रहे भगवन्त हैं।
शास्त्रवर्दी पहन कर अब, मूर्खता इठला रही,
विदेशों से विभव लाने, को मचलती जा रही।
हृदय में भगवान् हैं, पूजा उन्हीं की कीजिये,
मृदु मधुर वाणी कुसुम से, आरती कर लीजिये।
ज्ञान का विस्तार करिये, दूर कर अज्ञान को,
विश्व की यह मांग है, अब देखिये भगवान् को।।

• शुभम् •

24 मार्च पर विशेष

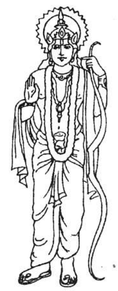

राम नवमी

आज अवधपुरी आनन्द छायो
घर घर मंगलचार बधाई,
कौशल्या रानी सुत जायो।।
शुभ नक्षत्र पुनर्वसु नौमी,
चैत्रमास सब भाँति सुहायो।
भौमवार वर मध्य दिवस के,
श्रीरघुवीर जनम तब पायो।।
निगमागम जाकी महिमा को,
गावत गावत पार न पायो।
सो महाराज काज भक्तन के,
नृप दशरथ को कुँवर कहायो।।
जाके दरशन को सुर तरसें,
ताहि धाय लै कण्ठ लगायो।
'नारायण' अपनी भक्ती को,
जग में प्रगट प्रभाव दिखायो।।

वृन्दावन कुम्भ

● श्री आदित्य उपाध्याय, वृन्दावन

श्रीधाम वृन्दावन, श्रीराधाकृष्ण की रसभूमि–लीलाभूमि तो है ही, साथ ही यह भक्ति की भी अप्रतिम भूमि है। जहाँ उसकी नित्य उपस्थिति अनुभव में आती है।

यह पवन–पावन–पुनीत वृन्दावन भूमि ज्ञान, वैराग्य व भक्ति की त्रिवेणी से जनमानस को उल्लसित करने वाले योगेश्वर श्रीकृष्ण की क्रीड़ा स्थली रही है।

इसी पवित्र भूमि में प्रति बारह वर्ष के अन्तराल पर यमुना के तटीय क्षेत्र में महाकुम्भ अथवा महामाहात्म्य महोत्सव का आयोजन होता है।

इस महाकुंभ के अवसर पर विभिन्न सम्प्रदायों, मठों, मंदिरों, अखाड़ों आदि साधु/महात्माओं का आगमन होता है जो अपने सदुपदेशों/प्रवचनों तथा व्याख्यानों के माध्यम से जन सामान्य के मन में श्रद्धा व अध्यात्म की गंगा प्रवाहित कर देते हैं।

श्रीवृन्दावन कुम्भ पर्व विद्वद्जन परिभोग्य शास्त्र मन्थन, पौराणिक चिन्तन एवं भक्तिरस विषय का विशेष उत्प्रेरक है। जो यहाँ इस शुभ बेला पर साक्षात्–साकार रूप से दृष्टि व चिन्तन में आता है।

राधा सर्वेश्वर भगवान की नित्य विहार स्थली, संतों/मनीषियों की पूज्य तपस्थली श्रीवृन्दावन की पावन भूमि, वैसे तो इसकी महिमा से सम्पूर्ण जगत् पूर्व परिचित है ही लेकिन कुम्भ के इस विराट् आयोजन से जो बसन्त पंचमी से लेकर होली तक सम्पन्न होता है, इसकी यश कीर्ति और वेगवती हो जाती है।

अनेक पुराण ग्रन्थों में कुम्भ महापर्व की उत्पत्ति से सन्दर्भित कथाएँ–उपकथाएँ प्रसंगादि का वर्णन अनेकानेक प्रकार से किया गया है पर सर्वमान्य–सर्व प्रचलित मान्यता यह है कि अजर–अमर होने के लिये अमृत प्राप्ति हेतु देव और दानवों की सम्मिलित शक्ति से समुद्र मंथन हुआ, जिसमें सर्वप्रथम तीक्ष्ण विष निकला, जिसे देवों की प्रार्थना पर सदाशिव ने अपने कंठ में धारण कर नीलकंठ की उपाधि धारण की। अन्तिम दौर में धन्वन्तरि अपने हाथों में अमृत भरा कुंभ कलश या घट लेकर प्रकट हुये, जिसे प्राप्त करने के लिये देवों–असुरों में छीना–झपटी होने लगी। इस बीच वह अमृत–कुंभ इन्द्रपुत्र जयंत के हाथ लग गया, जिसे लेकर वह भाग निकला। असुर भी उसके पीछे दौड़ लिये। देवों–दानवों में १२ दिनों तक (देवताओं का एक दिन पृथ्वी के एक वर्ष के बराबर होता है) अमृत प्राप्त करने के लिये संघर्ष होता रहा, इस संघर्ष के फलस्वरूप बारह स्थानों पर, जिनमें ८ स्वर्ग हैं तथा ४ पृथ्वी के हैं, अमृत बिन्दु छलके।

उस अमृत कुंभ की रक्षा में बृहस्पति, सूर्य व चंद्र ने जयंत की सहायता की थी। यही कारण है कि कुंभ का आयोजन बृहस्पति, सूर्य व चंद्र के ज्योतिषीय योग के अनुसार गृहराशि योग के अनुसार होता है।

अर्थात् जिस समय गुरु, चंद्र व सूर्य एक विशिष्ट राशि पर आते हैं तब कुंभ में अमृत छलकने वाले चार स्थानों पर (हरिद्वार/प्रयाग/नासिक/उज्जैन) में कुंभ का आयोजन होता है।

पुराण–प्रख्यात पूर्वोक्त चारों स्थानों से अलग वृन्दावन एक ऐसा पाँचवा स्थान है, जहाँ प्रति बारहवें वर्ष कुंभ पर्व आयोजित होता है। यह हरिद्वार में होने वाले कुंभ पर्व से एक माह पूर्व लगता है, जिसकी अवधि माघ शुक्ल (बसंत पंचमी) से फाल्गुन शुक्ल (रंगीली) एकादशी तक रहती है।

यथार्थ दृष्टि से देखा जाये तो यही वास्तविक कुंभ है, जिसमें पूरे एक माह तक सूर्य और बृहस्पति कुम्भ राशि में स्थिर रहते हैं तथा फाल्गुनी अमावस्या को चन्द्रमा में उसमें आ जाता है। इस प्रकार अमृत कुंभ की सुरक्षा से सम्बन्धित तीनों ग्रह इसी कुम्भ में (वृन्दावन कुंभ) में कुंभ राशि में अवस्थित रहते हैं।

यहाँ यह बताना यथोचित रहेगा कि अमृत कुंभ का श्रीवृन्दावन से कुछ भी सम्पर्क न रहने पर इस पर्व का ''वृन्दावन कुंभ'' नाम प्रसिद्ध क्यों हुआ ?

इसके समाधान में यह कहा जाता है कि जब श्रीवृन्दावन धाम और इसके सच्चिदानन्द स्वरूप का प्रकाशन हुआ तो समस्त वैष्णवाचार्यों, सम्प्रदार्यों के महन्तों, मण्डलेश्वरों तथा परमार्थ तत्वज्ञ साधु सन्त–समाज का ध्यान श्रीवृन्दावन धाम जोकि चिन्मय लीला भूमि है, की ओर गया, तब से समस्त साधु–संत समाज के हृदय में श्रीहरि के द्वार–हरिद्वार जाने से पूर्व वन्दनात्मक मंगलाचरण के रूप में अथवा शुभाधिवास रूप में श्रीवृन्दावन के यमुना पुलिन में निवास कर महोत्सव मनाने हेतु पवित्र स्फूर्ति ने जन्म ले लिया। अर्थात् पहले यहाँ एकत्रित होकर ब्रजरज को नमन कर हरिद्वार जाने की परम्परा का प्राकट्य हो गया, उसका प्रचलन हो गया। तभी से यहाँ (श्रीवृन्दावन में) कुंभ पर्व का आयोजन होने लगा।

अमृत–कुंभ का श्रीवृन्दावन के कुछ भी सम्पर्क न होने पर भी इस पर्व का ''वृन्दावन–कुंभ'' नाम उचित ही लगता है क्योंकि हरिद्वार, प्रयाग, नासिक तथा उज्जैन के कुम्भ पर्व की भाँति यहाँ का पर्व भी एक ऐसे विराट घड़े या कुम्भ के रूप में देखने में आता है, जो देश–विदेश, विभिन्न धर्मों, जातियों, चारों वर्णाश्रमियों, साधुओं–रसिकों, वैष्णवों, भक्तों की आचरणगत परम्पराओं से पूर्ण भरा होता है।

वृन्दावन कुंभ पर्व की प्रामाणिकता और ऐतिहासिकता असंदिग्ध है। साधुओं के अखाड़ों के पास ऐसे दस्तावेज हैं जो दर्शाते हैं कि यह पर्व सैकड़ों वर्ष प्राचीन है तथा पारंपरिक रूप से अनवरत आयोजित होता आ रहा है।

माँ की ममता

रचयिता– श्रीशिवकुमार रुईया, कोलकाता

कौन–सी है वो चीज़
जो यहाँ नहीं मिलती,
सब कुछ है मिल जाता
लेकिन माँ नहीं मिलती।
भगवान् के आगे भी
कितने सर झुकते नहीं,
माँ को जो न माने
ऐसे शख्स मिलते नहीं।
उदास जब मैं होता
माँ ही आके समझाती,
ममता उस माँ की
स्मृति भूल नहीं पाती।

भक्ति-रस

● डॉ. भागवतकृष्ण नांगिया

भक्ति के विविध निरूपण

श्रीचैतन्यंदेव ने परब्रह्म श्रीभगवान् एवं जीव के मध्य अंश–अंशी, सेवक–सेव्य का सम्बन्ध स्वीकार किया है। जैसा कि अनेक श्रुति स्मृतियों और पंचम वेद स्वरूप श्रीमद्भागवत में भी निरूपण किया गया है। अंशी का या सेवक का परम कर्त्तव्य है अंश की या स्वामी की सेवा। सेवा का प्राण है प्रेम। अर्थात् प्रेम के बिना सेवा संभव नहीं। अतः जीव का एकमात्र कर्त्तव्य है ईश्वर की सर्वतोभावेन अनुकूलता या प्रेममयी तीव्र वासना से सेवा सम्पादन करना। इसी का नाम भक्ति है। विभिन्न आाचार्यों–मनीषियों ने भक्ति का विभिन्न रूपों में प्रतिपादन किया है। विभिन्न पुराणों में, श्रुति, स्मृतियों में भक्ति का निरूपण इस प्रकार किया गया है–

• श्रीमद्भागवत में कहा है–

"मद्गुणश्रुतिमात्रेण मयि सर्वगुहाशये।
मनोगतिरविच्छिन्ना यथा गंगाम्भसोऽम्बुधौ।।
लक्षणं भक्तियोगस्य निर्गुणस्य ह्युदाहृतम्।
अहैतुक्यव्यवहिता या भक्तिः पुरुषोत्तमे।।"

(श्रीमद्भागवत ३/२६/७७/७८)

सागर में स्वतः प्रवाहित गंगा के जल की अखण्ड धारा के समान जो मनोगति मेरे गुण श्रवण मात्र से फलानुसंधान रहित तथा अनन्य होकर सर्वान्तर्यामी मुझ पुरुषोत्तम में अविच्छिन्न भाव से निहित होती है। वह मनोगति रूपा भक्ति ही निर्गुण भक्तियोग का स्वरूप है।

• विष्णुपुराण में कहा है–

"या प्रीतिरविवेकानां विषयेण्वनपायिनी
त्वामनुस्मरतः सा मे हृदयान्मापसर्पतु।।"

(विष्णुपुराण १/२०/२०)

अविवेकी पुरुषों की विषयों में जैसी अविचल आसक्ति रहती है, तुम्हारा अनुस्मरण करते हुए तुम्हारे प्रति मेरी भी वैसी ही अविचल प्रीति रहे, वह मेरे हृदय से कभी दूर न हो।

• गरुड़ पुराण के अनुसार–

"भज इत्येष वै धातुः सेवा यां परिकीर्तिता।
तस्मात् सेवा बुधैः प्रोक्ता भक्तिसाधन भूयसी।।

(गरुड़ पुराण अ० २३१)

भज् धातु का अर्थ सेवा करना है– भज सेवायाम् इसीलिए बुद्धिमानों ने सेवा को भक्ति का प्रधान साधन कहा है।

• नारद पंचरात्र में कहा है–

"सर्वोपाधि विनिर्मुक्तं तत्परत्वेन निर्मलम्।
हृषीकेण हृषीकेश सेवनं भक्तिरुच्यते।।"

(श्रीभक्तिरसामृत सिन्धु १/१/१०)

तत्परतापूर्वक सम्पूर्ण उपाधियों से रहित होकर इन्द्रियों से विशुद्ध भगवत्सेवा ही भक्ति कही जाती है।

• नारद भक्तिसूत्र के अनुसार–

"सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा,
अमृत स्वरूपा च यल्लब्ध्वा पुमान्
सिद्धो भवति, अमृतो भवति, तृप्तो भवति।।"

(नारद भक्ति सूत्र १–३)

वह परमात्मा में परमप्रेमरूप तथा अमृत स्वरूपा है, जिसे प्राप्त कर पुरुष सिद्ध हो जाता है, अमृत हो जाता है, तृप्त हो जाता है और भी कहा है–

''पूजादिष्वनुरागः इति पाराशर्यः''

(नारद भक्तिसूत्र १६)

भगवान् की पूजादि में अनुराग यह पाराशर का मत है।

''कथादिष्विति गर्गः''

(नारद भक्तिसूत्र १७)

भगवान् की कथाओं आदि में प्रेम, यह गर्ग का मत है।

श्रीपाद शंकराचार्य कहते हैं–

''मोक्ष कारण सामग्र्यां भक्तिरेव गरीयसी''
''स्वस्वरूपानुसन्धानं भक्तिरित्यभिधीयते
स्वात्मतत्त्वानुसंधानं भक्तिरित्यपरे जगुः''

(विवेक चूड़ामणि ३२–३३)

मुक्ति की कारण सामग्री में भक्ति ही सबसे बढ़कर है और अपने वास्तविक स्वरूप का अनुसन्धान करना ही भक्ति है। कोई–कोई ऐसा कहते हैं कि स्वात्मतत्त्व का अनुसन्धान करना ही भक्ति है।

शाण्डिल्य भक्तिसूत्र कहता है–

''सा परानुरक्तिरीश्वरे''

(शाण्डिल्य भक्तिसूत्र २)

वह ईश्वर में परानुरक्ति है।

• रामानुज के अनुसार–

''स्नेह पूर्वकमनुध्यानम्''

(रामानुज विशिष्टाद्वैत कोष)

स्नेहपूर्वक परमात्मा का अनुसन्धान ही भक्ति है।

• मध्वसिद्धान्तानुसार–

''उपासना च द्विविधा, सततं
शास्त्रभ्यासरूपाध्यानमरूप च।
ध्यानं च इतर तिरस्कारपूर्वक
भगवद्विषयकाखण्डस्मृतिः'।''

(मध्वसिद्धान्तसार)

उपासना दो प्रकार की है– निरन्तर शास्त्रों का अभ्यास करना तथा परमात्मा का ध्यान करना। अन्य सभी विषयों का तिरस्कार कर भगवद् विषयक अखण्ड स्मृति ही ध्यान है।

और भी कहा है–

''परमेश्वर भक्तिर्नाम
निरवधिकानन्तानवद्य–कल्याण–
गुणत्व–ज्ञानपूर्वकः स्वात्मात्मीय समस्त
वस्तुभ्योऽनेक गुणाधिकः अन्तराय
सहस्रेणापि–अप्रतिबद्धो निरन्तर प्रेम प्रवाहः।''

(अनुव्याख्यान परन्याय सुधा, मध्वसम्प्रदाय)

भक्ति परमेश्वर के प्रति एक ऐसे निरन्तर प्रेम प्रवाह में निहित होती है, जो सहस्त्रों बाधाओं में भी क्षत अथवा प्रभावित नहीं होती जो स्वात्म प्रेम एवं आत्मीय वस्तुओं के प्रति प्रेम से अनेक गुणा–अधिक होता है और जो इस ज्ञान से उत्पन्न होता है कि परमेश्वर अनन्त शुभ और कल्याणकारी गुणों से सम्पन्न है।

• श्रीपाद निम्बार्काचार्य के अनुसार–

''कृपास्य दैन्यादियुजि प्रजायते
यथा भवेत् प्रेमविशेषलक्षणा।
भक्तिर्ह्यनन्याधिपतेर्महात्मनः
सा चोत्तमा साधनरूपिकापरा।

(निम्बार्काचार्य दशश्लोकी ६)

दैन्यादि गुणों से युक्त पुरुष के ऊपर भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा प्रकट होती है। उस कृपा के द्वारा उन सर्वेश्वर परमात्मा में प्रेम विशेष रूपा भक्ति उत्पन्न होती है। यह भक्ति दो प्रकार की है– एक साधनरूपा अपरा भक्ति और दूसरी उत्तमा परा–भक्ति।

• चैतन्यसम्प्रदायी भक्तिरस प्रतिष्ठाता श्रीरूप गोस्वामी ने कहा है–

''अन्याभिलाषिताशून्यं ज्ञानकर्माद्यनावृतम्।
आनुकूल्येन कृष्णानुशीलनं भक्तिरुत्तमा।।''

(भक्तिरसामृतसिन्धु पूर्व १/११)

सम्पूर्ण अभिलाषाओं से रहित तथा ज्ञान और कर्म से अनाच्छादित श्रीकृष्ण के अनुकूल अनुशीलन उत्तमा भक्ति है।

• श्रीपाद वल्लभाचार्य के अनुसार–

''माहात्म्यज्ञानपूर्वस्तु सुदृढः सर्वतोऽधिकः।
स्नेहो भक्तिरिति प्रोक्तस्तया मुक्तिर्न चान्यथा।।''

(वल्लभाचार्य तत्त्वदीपनिबन्ध शा०)

भगवान् के माहात्म्य ज्ञानपूर्वक उनमें सर्वाधिक और दृढ़ स्नेह का होना ही भक्ति है और उसी से मुक्ति होती है। मुक्ति का अन्य कोई उपाय नहीं है।

इसके अलावा भी भक्ति की भिन्न–भिन्न परिभाषायें प्रचलित हैं जैसे–

''गाढ़–व्यसन–साहस्र–सम्पातेऽपि निरंतरं न हीयते
यदीति स्वादु तत्प्रेमलक्षणम्।''

वह एक ऐसा प्रगाढ़ व्यसन है, जो अनेक विपत्तियों एवं संकट के होते हुए भी निरन्तर बना रहता है।

''सा तैलधारा सम नित्य संस्मृतिः
सन्तान रूपेश परानुरक्तिः
भक्तिर्विवेकादिक सप्तजन्या
यमाद्यष्ट सुबोधकांगा।।''

तैलधारा के समान अविच्छिन्न रूप से नित्य, अखण्ड स्मरणपूर्वक परम अनुराग ही भक्ति है। वह सात उपायों– विवेक, विमोक, अभ्यास, क्रिया, कल्याण, अनवसाद और

अनुद्धर्ष से उत्पन्न होती है तथा यमादि अंग उसके बोधक हैं।

''द्रुतस्य भगवद् धर्माद् धारावाहिकतां गता।
सर्वेशे मनसो वृत्तिर्भक्तिरित्यभिधीयते।।''

भागवतधर्मों के सेवन से द्रवित हुए चित्त की भगवान् सर्वेश्वर के प्रति जो धारावाहिक वृत्ति है, उसी को भक्ति कहते हैं।

''भक्तिर्मनस उल्लास विशेषः''

भक्ति मन का उल्लास विशेष है। इत्यादि।

इस प्रकार भिन्न–भिन्न मनीषियों ने भक्ति के भी विविध निरूपण किए हैं। किसी ने तो भक्ति का सीधा–सादा अर्थ सेवा बताया और किसी ने भक्ति को मुक्ति का ही कारण बताया तो किसी ने परमात्मा का ध्यान और शास्त्र अभ्यास करना ही भक्ति कहा।

कोई–कोई तो भक्ति को एक प्रगाढ़ व्यसन भी कहते हैं। लेकिन इन सबसे परे जीव गोस्वामी ने भक्ति को रस रूप में स्वीकार किया है। भक्ति को रस रूप में प्रतिष्ठित करने का एकमात्र श्रेय श्रीजीवगोस्वामी के गुरु श्रीपाद रूप गोस्वामी को ही है।

संस्कृत काव्य शास्त्र के लगभग दो हजार वर्षों के इतिहास में नाट्याचार्य भरत से लेकर पण्डितराज जगन्नाथ तक किसी ने भी स्पष्टतः

भक्ति को रसरूप में मान्यता प्रदान नहीं की यद्यपि विभिन्न आचार्यों और पृथक्–पृथक् मतों के अनुसार रस के भेद एक, आठ, नौ, दस, बारह अथवा असंख्य हैं, किन्तु भारतीय काव्य शास्त्र के इतिहास में भरत की परम्परा का सम्मान करने वाले अनेक परवर्ती दिग्गज आचार्यों ने नौ के आस–पास ही रस की संख्या रखने का समर्थन किया है तथा अन्य सम्भावित रसों का अन्तर्भाव या तो उन्होंने नव रसों में ही करने का प्रयत्न किया है अथवा उनको भावकोटि में ही रखकर सन्तोष कर लिया है। किन्तु श्रीरूप गोस्वामी ने अपने सम्पूर्ण ग्रन्थ श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु में भक्ति को रसरूप में प्रतिष्ठित कर सिद्ध कर दिया है। इस ग्रन्थ में भक्तिरस से सम्बन्धित उन सभी प्रश्नों पर विचार किया गया है, जिनसे वह साहित्यशास्त्रीय प्रणाली के अनुसार निर्बाध रूप से रस के स्थान पर प्रतिष्ठित हो सके। वास्तव में यह ग्रन्थ तो भक्ति रस का प्रस्थान ग्रन्थ ही है।

भक्ति को भावमात्र सिद्ध करने वालों के प्रति श्रीरूप गोस्वामी का मत है– "भक्ति को भावमात्र सिद्ध करना भक्तिसाहित्य की महती परम्परा की उपेक्षा है" क्योंकि पुराणों तथा भक्ति सम्बन्धी विविध ग्रन्थों में भक्ति का रसत्व स्वीकार किया गया है और रस परीक्षण की प्रत्येक कसौटी पर उसे परखा जा सकता है।

केचिदस्यारतेः कृष्णभक्तित्यादिबहिर्मुखाः,
भावत्वमेव निश्चित्य न रसावस्थतां जगुः।
इति तावदसाधीयो यत्पुराणेषु केषुचित्
श्रीमद्भागवते चैव प्रकटो दृश्यते रसः।।

(भक्तिरसामृतसिन्धु ३/२/१३६–४०)

श्रीमद्भागवत ग्रन्थ जो कि सभी सम्प्रदायों का मुख्य आधार ग्रन्थ है, में भी भक्ति रस का वर्णन है। वह तो भक्तिरस सिद्धान्त का आकर ग्रन्थ ही है। श्रीभागवत के एक पद्य में भगवद् विषयक रति को "रसरूप" और भागवतों को "रसिक" नाम से उल्लेखित किया गया है–

"मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः"

(श्रीमद्भागवत १/१/३)

वैदिक साहित्य में वर्णित श्रद्धा तथा स्तुतियों में ही भगवद्भक्ति के विकास का अमरबीज छिपा हुआ है। उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराण, पाञ्चरात्र–साहित्य ने विशेष रूप से गुप्तकाल तक आकर वैदिक स्रोत में प्रबल वेग पैदा किया। तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार यह कभी तूफानीवेग और अदृश्य रूप से देश के लोक– जीवन में अविच्छिन्न रूप से बहता रहा।

रचयिता — श्री बिन्दुजी

**गर प्रेम की इस दिल में लगी घात न होती।
तो सच है कि मोहन से मुलाकात न होती।।
सरकार को नजराने में देता मैं भला क्या?
कुछ पास गुनाहों की जो सौगात न होती।।
क्यों होते मुखातिब, वे भला मेरी तरफ को।
आहों में कशिश की जो करामात न होती।।
है दर्दे मुहब्बत का फकत सारा तमाशा।
यह दिल में न होता तो कोई बात न होती।।
दृग 'बिन्दु' बताते हैं कि घनश्याम है दिल में।
घनश्याम न होते तो यह बरसात न होती।।**

आँसू

● रचयिता : श्री बी. डी. मित्तल 'शूल' मथुरा

किसी के हैं विकलता के कहीं उल्लास के आँसू
पड़े जब चोट तन-मन पर निकल आते हैं ये आँसू

कहीं गमगीन होते हैं कहीं खुशियाँ जताते हैं
बड़े चालाक हैं आँसू सचाई को छुपाते हैं
जरा सा दुःख पड़ने पर छलक जाते हैं ये आँसू

अगर मन में हो निष्ठुरता नहीं बाहर कभी आते
बिना संवेदना के ये नहीं धीरज बँधा पाते
तरस खाते नहीं उन पर जो होते गैर के आँसू

बड़े उथले ये होते हैं बड़ी गहराई से आते
हैं नाटककार ये ऊँचे दिखावा खूब कर पाते
जताते छद्म हमदर्दी बहाते झूठ के आँसू

सदा अपने विराने में न जाने भेद क्यों करते
परायों को दिखावा है मगर अपनों को ही झरते
अगर गम होता अपनों का निरन्तर बहते ये आँसू

विरह की आग में मीरा तड़पती फूटकर रोती
जगत से तोड़कर नाता कृष्ण की याद में खोती
ढूँढ़ती हो गई पागल बहे मीरा के ये आँसू

वियोगिन गोपियाँ जलती रहीं विरहा की ज्वाला से
गूढ़ उपदेश ऊधो के चुभे थे 'शूल' भाला से
बहाते गोपियों के नैंन जमना-नीर से आँसू

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2067 चैत्र शुक्ल पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 06/04 • सूर्यास्त 05/56 • वसन्त ऋतु (ता0 16 मार्च से 30 मार्च 2010 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
16/03★	मंगलवार	प्रतिपदा 03.00	उ.भा. 60.00 समस्त	शोभन नाम सम्वत्सर का आरंभ, वासंतीय नवरात्र आरंभ, कलश स्थापन एवं ध्वजारोपण दिन में 11/36 से 12/24, पंचक गुड़ी-पड़वा★
		तारा लगा हुआ है।		
		वर्ष प्रवेश से खरमास चालू है।		
17/03	बुधवार	द्वितीया 03.59	उ.भा. 07.53	रेवती के मूलारंभ प्रातः 07/53 से, गुरु उदय रात्रि उपरान्त 04/31 पर, पंचक.
		तारा उतर गया		
18/03	गुरुवार	तृतीया 04.27	रेवती 09.20	मूल चल रहे हैं, **पंचक** समाप्त दिन में 09/20 पर, सौभाग्य सुन्दरी 03 व्रत, **गणगौर**, **मत्स्यावतार**, चन्द्र मेष राशि पर दिन में 09/20 से ★
19/03	शुक्रवार	चतुर्थी (04.23)	अश्विनी 10.18	मूल समाप्त दिन में 10/18 पर, भद्रा दिन में 04/25 से रात्रि 04/23 तक, **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी 04 व्रत** ★
20/03	शनिवार	पंचमी (03.48)	भरणी 10.42	चन्द्र वृष राशि पर दिन में 04/42 से, **श्रीराम-राज्य महोत्सव** ★
21/03	रविवार	षष्ठी (02.45)	कृत्तिका 10.39	श्रीस्कन्द षष्ठी व्रत, **श्री सूर्य षष्ठी व्रत** (बिहार, यू.पी.) ★
22/03	सोमवार	सप्तमी (01.19)	रोहिणी 10.09	भद्रा रात्रि 01/19 से, चन्द्र मिथुन राशि पर रात्रि 09/45 से, **श्री अन्नपूर्णा परिक्रमा** रात्रि में 1/19 से ★
23/03	मंगलवार	अष्टमी 11.32	मृगशिरा 09.20	**श्रीदुर्गाष्टमी 08 व्रत**, अष्टमी की कढ़ाई, **अन्नपूर्णा परिक्रमा** रात्रि 11/32 तक भद्रा दिन में 12/25 तक ★
		अष्टमी की कढ़ाई।		
24/03★	बुधवार	नवमी 09.28	आर्द्रा 08.09	**श्रीराम नवमी, श्रीरामावतार (दोपहर में) विशेषोत्सव अयोध्या**, कर्क राशि पर चन्द्रमा रात्रि 01/05 से ★
		नवमी की कढ़ाई।		
25/03★	गुरुवार	दशमी 07.13	पुनर्वसु 06.43प्रातः	नवरात्र व्रत की पारणा, गुरु-पुष्य योग दिन में 06/43 से रात्रि उपरान्त 05/09 तक, श्लेषा के मूलारंभ रात्रि उपरान्त 05/09 पर, पुष्य समाप्त रात्रि शेष 05/09 पर ★
26/03	शुक्रवार	एकादशी 04.50	श्लेषा 03.29	मूल चल रहे हैं, भद्रा प्रातः 06/01 से दिन में 04/50 तक, चन्द्र सिंह राशिपर रात्रि 03/29 पर, **कामदा 11 एकादशी व्रत सबकी** ★
27/03	शनिवार	द्वादशी 02.25	मघा (01.50)	मूल समाप्त रात्रि 01/50 पर, **शनि प्रदोष 12 व्रत**, श्रीअनंग 13 व्रत ★
28/03	रविवार	त्रयोदशी 12.03	पू.फा. (12.14)	चन्द्र कन्या राशि पर रात्रि शेष 05/53 से, **श्रीमहावीर जयंती (जैन)** ★
29/03	सोमवार	चतुर्दशी 09.47	उ.फा. (10.50)	भद्रा दिन में 09/47 से रात्रि 08/46 तक, **व्रत की पूर्णिमा** ★
30/03★	मंगलवार	पूर्णिमा 07.44	हस्त (09.39)	स्नान-दान की पूर्णिमा, **श्रीहनुमान जयंती** (विशेषोत्सव सालासर) मेहंदीपुर एवं अन्य हनुमत् स्थल), वैशाख मास के नियम आरंभ ★

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2067 वैशाख कृष्ण पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/53 • सूर्यास्त 06/07 • वसन्त ऋतु (ता0 31 मार्च से 14 अप्रैल 2010 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
31/03★	बुधवार	प्रतिपदा 05.58 प्रातः	चित्रा (08.50)	चन्द्र तुला राशि पर दिन में 09/15 से, **कच्छपावतार**, द्वितीया समाप्त रात्रि शेष 04/33 पर ★
01/04	गुरुवार	तृतीया (03.30)	स्वाती (08.20)	भद्रा दिन में 04/01 से रात्रि 03/30 तक ★
02/04	शुक्रवार	चतुर्थी (02.56)	विशाखा (08.18)	चन्द्र वृश्चिक राशि पर दिन में 02/18 से, **संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी 04 व्रत**, चन्द्रोदय रात्रि 09/49 पर ★
03/04	शनिवार	पंचमी (02.51)	अनुराधा (08.44)	ज्येष्ठा के मूल आरंभ रात्रि 08/44 से ★
04/04	रविवार	षष्ठी (03.19)	ज्येष्ठा (09.42)	चन्द्र धनु राशि पर रात्रि 09/42 से, भद्रा रात्रि 03/19 पर ★
05/04	सोमवार	सप्तमी (04.15)	मूल (11.09)	मूल समाप्त रात्रि 11/09 पर, भद्रा समाप्त दिन में 03/47 पर ★
06/04	मंगलवार	अष्टमी (05.40)	पू.षा. (01.04)	**श्रीशीतलाष्टमी 08 व्रत (बूढ़ा बास्योड़ा)** ★
07/04	बुधवार	नवमी 60.00समस्त	उ.षा. (03.20)	चन्द्र मकर राशि पर दिन में 07/37 से ★
08/04	गुरुवार	नवमी 07.25	श्रवण 60.00समस्त	भद्रा रात्रि 08/26 पर ★
09/04	शुक्रवार	दशमी 09.26	श्रवण 05.50 प्रातः	भद्रा दिन में 09/26 तक, चन्द्र कुम्भ राशि पर रात्रि 07/09 पर, **पंचक** आरम्भ रात्रि 07/09 पर ★
10/04	शनिवार	एकादशी 11.31	घनिष्ठा 08.27	**वरुथिनी 11 एकादशी व्रत सबका, श्रीबल्लभाचार्य जयंती, पंचक** ★
11/04	रविवार	द्वादशी 01.32	शतभिषा 11.01	प्रदोष 12 व्रत, पंचक ★
12/04★	सोमवार	त्रयोदशी 03.16	पू.भा. 01.20	भद्रा दिन में 03/16 से रात्रि 03/59 तक, चन्द्र मीन राशि पर प्रातः 06/45 से, **मास शिव रात्रि 13 व्रत, पंचक** ★
13/04	मंगलवार	चतुर्दशी 04.41	उ.भा. 03.19	**पंचक**, रेवती के मूलारंभ दिन में 03/19 से ★
14/04	बुधवार	अमावस्या 05.36सायं	रेवती 04.53	**स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या**, मूल चल रहे हैं, चन्द्र मेष राशि पर दिन में 04/53 से, **पंचक** समाप्त दिन में 04/53 पर ★

★=शुभ दिन, ( )=रात,--=दिन

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

सं0 2067 अधिक वैशाख कृष्ण पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/42 • सूर्यास्त 06/18 • वसन्त ऋतु (ता0 15 अप्रैल से 28 अप्रैल 2010 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
15/04	गुरुवार	प्रतिपदा 06.00 सायं	अश्विनी 05.56सायं	**पुरुषोत्तम मास का आरम्भ**, सौर वैशाख मास का आरम्भ, बंगला सन् 1417 का आरम्भ मूल समाप्त सायं 05/56 पर ★
		खरमास समाप्त		
16/04	शुक्रवार	द्वितीया (05.53सायं)	भरणी (06.28)सायं	चन्द्र वृष राशि पर रात्रि 12/29 पर ★
17/04	शनिवार	तृतीया (05.16सायं)	कृत्तिका (06.31)सायं	भद्रा रात्रि 04/44 से ★
18/04	रविवार	चतुर्थी 04.11	रोहिणी (06.07सायं)	भद्रा दिन में 04/11 तक, **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी 04 व्रत** ★
19/04	सोमवार	पंचमी 02.43	मृगशिरा (05.21)सायं	चन्द्र मिथुन राशि पर प्रातः 05/43 से ★
20/04	मंगलवार	षष्ठी 12.53	आर्द्रा 04.14	– ★
21/04	बुधवार	सप्तमी 10.48	पुनर्वसु 02.52	भद्रा दिन में 10/48 से रात्रि 09/40 तक, चन्द्र कर्क राशि पर दिन में 09/12 से ★
22/04	गुरुवार	अष्टमी 08.31	पुष्य 01.18	गुरु–पुष्य योग दिन में 01/18 तक, श्लेषा के मूल आरम्भ दिन में 01/18 से ★
23/04	शुक्रवार	नवमी 06.06प्रातः	श्लेषा 11.39	चन्द्र सिंह राशि पर दिन में 11/39 से, मूल चल रहे हैं, दशमी समाप्त रात्रि 04/04 पर ★
24/04	शनिवार	एकादशी (01.16)	मघा 09.59	भद्रा दिन में 02/04 से रात्रि 01/16 तक, **पुरुषोत्तमी 11 एकादशी व्रत स्मार्त्त का)**, मूल समाप्त दिन में 02/59 पर ★
25/04	रविवार	द्वादशी (11.00)	पू.फा. 08.22	चन्द्र कन्या राशि पर दिन में 02/01 से, पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत (वैष्णव) ★
26/04	सोमवार	त्रयोदशी (08.55)	उ.फा. 06.55 प्रातः	**सोम प्रदोष 13 व्रत** ★
27/04★	मंगलवार	चतुर्दशी (07.08)	हस्त 05.42 प्रातः	भद्रा रात्रि 07/08 से, चन्द्र तुला राशि पर सायं 05/15 पर, चित्रा समाप्त रात्रि शेष 04/49 पर ★
28/04	बुधवार	पूर्णिमा (05.39सायं)	स्वाती (04.13)	**स्नान–दान व्रत की पूर्णिमा**, भद्रा प्रातः 06/23 तक ★

★=शुभ दिन, ( )=रात,--=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2067 अधिक वैशाख कृष्ण पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/32 • सूर्यास्त 06/28 • वसन्त ऋतु (ता0 29 अप्रैल से 14 मई 2010 तक)

तारीख	वार	तिथि समय बजे तक	नक्षत्र समय बजे तक	व्रत पर्व विवरण
29/04	गुरुवार	प्रतिपदा 04.34	विशाखा 04.05	चन्द्र वृश्चिक राशि पर रात्रि 10/06 से ★
30/04	शुक्रवार	द्वितीया 03.58	अनुराधा 04.26	भद्रा रात्रि 03/55 से, ज्येष्ठा के मूल आरम्भ रात्रि शेष 04/26 से ★
01/05	शनिवार	तृतीया 03.51	ज्येष्ठा 05.16	भद्रा दिन में 03/51 से, चन्द्र धनु राशि पर रात्रि 05/16 से, **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी 04 व्रत,** चन्द्रोदय रात्रि 09/29 पर, मूल चल रहे हैं ★
02/05	रविवार	चतुर्थी 04.17	मूल 60.00समस्त	मूल चल रहे हैं ★
03/05	सोमवार	पंचमी 05.12 सायं	मूल 06.38प्रातः	मूल समाप्त प्रातः 06/38 पर ★
04/05	मंगलवार	षष्ठी 06.34 सायं	पू.षा. 08.26	भद्रा सायं 06/34 पर, चन्द्र मकर राशि पर, दिन में 05/59 से ★
05/05	बुधवार	सप्तमी (08.18)	उ.षा. 10.39	भद्रा दिन में 07/26 तक ★
06/05	गुरुवार	अष्टमी (10.17)	श्रवण 01.06	चन्द्र कुम्भ राशि पर रात्रि 02/26 से, **पंचक** आरम्भ रात्रि 02/26 से ★
07/05	शुक्रवार	नवमी (12.21)	धनिष्ठा 03.45	**पंचक** ★
08/05	शनिवार	दशमी (02.19)	शतभिषा 05.55सायं	भद्रा दिन में 01/20 से रात्रि 02/19 तक, **पंचक** ★
09/05	रविवार	एकादशी (04.02)	पू.भा. (08.42)	पंचक, चन्द्र मीन राशि पर दिन में 02/00 से, **पुरुषोत्तमी 11 एकादशी व्रत सबका** ★
10/05	सोमवार	द्वादशी (05.24)	उ.भा. (10.47)	रेवती के मूलारंभ रात्रि 10/47 से **पंचक** ★
11/05	मंगलवार	त्रयोदशी 60.00समस्त	रेवती (12.24)	चन्द्र मेष राशि पर रात्रि 12/24 से, **भौम प्रदोष 13 व्रत, पंचक** समाप्त रात्रि 12/24 पर, मूल चल रहे हैं ★
12/05	बुधवार	त्रयोदशी 06.17प्रातः	अश्विनी (01.35)	भद्रा प्रातः 06/17 से सायं 06/29 तक, **मास शिव रात्रि 13 व्रत,** मूल समाप्त रात्रि 01/35 पर ★
13/05	गुरुवार	चतुर्दशी 06.41 प्रातः	भरणी (02.14)	**श्राद्ध की अमावस्या** ★
14/05	शुक्रवार	अमावस्या 06.33 प्रातः	कृत्तिका (02.24)	स्नान-दान की अमावस्या, चन्द्र वृष राशि पर दिन 08/17 पर ★

★=शुभ दिन, ()=रात,--=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2067 वैशाख शुक्ल पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/23 • सूर्यास्त 06/37 • वसन्त ऋतु (ता0 15 मई से 27 मई 2010 तक)

तारीख	वार	तिथि समय बजे तक	नक्षत्र समय बजे तक	व्रत पर्व विवरण
15/05	शनिवार	प्रतिपदा 05.54 प्रातः	रोहिणी (02.06)	द्वितीया समाप्त रात्रि शेष 04/48 पर ★
16/05★	रविवार	तृतीया (03.19)	मृगशिरा (01.24)	चन्द्र मिथुन राशि पर दिन में 01/45 पर, परशुराम जयंती (प्रदोषकाल) **अक्षय तृतीया**, श्रीबद्री-केदार यात्रा ★
17/05	सोमवार	चतुर्थी (01.28)	आर्द्रा (12.21)	भद्रा दिन में 02/23 से रात्रि 01/28 तक, **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी 04 व्रत** ★
18/05★	मंगलवार	पंचमी (11.22)	पुनर्वसु (11.02)	चन्द्र कर्क राशि पर सायं 05/22 पर, **आदि जगदगुरु शंकराचार्य जयंती** ★
19/05★	बुधवार	षष्ठी (09.03)	पुष्य (09.31)	श्लेषा के मूलारंभ रात्रि 09/31 से, श्रीरामानुजाचार्य जयंती ★
20/05	गुरुवार	सप्तमी 06.37 सायं	श्लेषा (07.53)	भद्रा सायं 06/37 से, मूल चल रहे हैं, चन्द्र सिंह राशि पर रात्रि 07/53 पर, श्रीगंगा सप्तमी व्रत, **श्रीगंगोत्पत्ति** ★
21/05	शुक्रवार	अष्टमी 04.09	मघा 06.12 सायं	भद्रा प्रातः 05/23 तक, मूल समाप्त सायं 06/12 पर ★
22/05★	शनिवार	नवमी 01.44	पू.फा. 04.35	चन्द्र कन्या राशि पर रात्रि 10/13 से, श्री सीता नवमी, **जानकी जन्मोत्सव** ★
23/05	रविवार	दशमी 11.25	उ.फा. 03.05	भद्रा रात्रि 10/22 पर ★
24/05★	सोमवार	एकादशी 09.19	हस्त 01.49	भद्रा दिन में 09/19 तक, चन्द्र तुला राशि पर रात्रि 01/20 पर, **श्री मोहिनी 11 एकादशी व्रत सबका** ★
25/05	मंगलवार	द्वादशी 07.28	चित्रा 12.51	**भौम प्रदोष 12 व्रत** ★
26/05	बुधवार	त्रयोदशी 05.58 प्रातः	स्वाती 12.11	भद्रा रात्रि शेष 04/52 से, श्रीनरसिंह 14 चतुदर्शी व्रत, **श्रीनरसिंह अवतार**, ओंकार यात्रा, चतुर्दशी समाप्त रात्रि 04/52 पर ★
27/05★	गुरुवार	पूर्णिमा (04.14)	विशाखा 11.58	**स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, बुद्ध जयंती**, बुद्ध पूर्णिमा, चन्द्र वृश्चिक राशि पर प्रातः 06/01 से, **कूर्म जयंती 15** ★

★=शुभ दिन, ( )=रात,--=दिन

प्रेम-प्रचार

श्रीमद्भागवत संदेश

उपलब्ध DVD/CD/MP3

(I) श्रीभागवत कथा सम्पूर्ण
(II) श्रीराम कथा सम्पूर्ण
(III) नन्दोत्सव
(IV) उद्धव गोपी सम्वाद
(V) रासलीला
(VI) सुदामा चरित्र
(VII) अन्य भजन

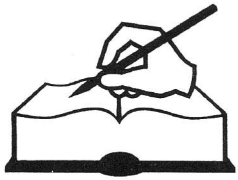

उपलब्ध साहित्य

(I) श्रीमद् भागवत सार
(II) श्रीमद् भागवत संदेश

श्रीठाकुर जी के प्रवचनों की DVD/CD/MP3 एवं उनके द्वारा प्रचारित श्रीमद् भागवत संदेश व अन्य साहित्य आप संस्थान के निम्नलिखित प्रतिनिधियों से प्राप्त कर सकते हैं।

शहर	व्यक्ति	फोन
कोलकाता (प.बं)	पं. बृजेश पाण्डेय	09331892199
बेंगलूरू (कर्नाटक)	पं. प्रदीप झा	09341054545
कानपुर (उ.प्र.)	श्रीअजित ओझा	09336774319
पटना (बिहार)	श्रीशरद चन्द्र	09334499000
रायपुर (छ.ग)	श्रीअगेश कुमार	09300484749
अहमदाबाद (गुजरात)	श्रीबकुल प्रसाद	09377127614
सम्भलपुर (उड़ीसा)	श्रीसंतोष कुमार	09337751000
जमशेदपुर (झारखण्ड)	श्रीमुक्तेश्वर प्रसाद	09334316280

इसके अतिरिक्त समस्त भारत से भक्तजन कोलकाता शाखा से सम्पर्क कर सकते हैं।

श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान (कोलकाता शाखा)
26, बड़तल्ला स्ट्रीट, तृतीय तल, कोलकाता
Tel:- 9330381000, 9331033090

श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
द्वारा संचालित
सेवा प्रकल्प

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय पं. श्रीकृष्ण चन्द्र शास्त्री द्वारा संरक्षित श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, पूर्णतया कृष्ण सेवा के लिए समर्पित है। श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की आधार शाखा श्रीठाकुर जी के निवास स्थान श्रीभागवत कृपा निकुंज, रमणरेती, वृन्दावन में अवस्थित है, जहाँ से विभिन्न प्रकार के सेवा प्रकल्पों का संचालन किया जाता है।

विभिन्न सेवाएँ :

1, श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, वृन्दावन की अपनी सत्संग–शाला है, जो कि श्रीभागवत कृपा निकुंज के भूतल में अवस्थित है, यहाँ श्रीठाकुर जी भागवत प्रचार–प्रसार के लिए समय–समय पर श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ एवं विभिन्न प्रकार के सत्संग ज्ञान यज्ञ का आयोजन करते रहते हैं।

2. परिक्रमा मार्ग, रमणरेती स्थित 'श्रीभागवत धाम' में श्रीठाकुर जी विद्यार्थियों को समय–समय पर भागवत शिक्षा का पाठ पढ़ाते हैं। यह श्रीमद्भागवत विद्यालय है जिसकी पूरी देख रेख श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान करता है।

3. ब्रज एवं गिरिराज के सौंदर्यीकरण के लिए श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष अष्टोत्तरसहस्त्र 1008 श्रीमद्भागवत कथा का विशाल आयोजन होता है। इस वर्ष 26 फरवरी से यह आयोजन श्रीधाम वृन्दावन में हुआ। इस आयोजन से बची राशि से वृक्षारोपण, पेयजल व्यवस्था, मार्ग सौन्दर्यीकरण का कार्य श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान द्वारा प्रतिपादित होता है।

4. श्रीराधा–माधव की कृपा से 'श्री भागवत आतिथेयम्' का निर्माण बड़े जोर पर है। प्रभु कृपा रही तो श्रीठाकुर जी इसका शुभोद्घाटन शीघ्र ही करेंगे। इस तीन मंजिले भागवत आतिथेयम् में वृन्दावन आने वाले भक्तों के ठहरने का उत्तमोत्तम प्रबन्ध होने जा रहा है। रमणरेती मार्ग पर श्रीभागवत कृपा निकुंज के ठीक सामने एवं फोगला आश्रम से ठीक पहले यह निर्माण हो रहा है।

5. श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान के तत्वावधान में श्रीठाकुरजी समय–समय पर भारत के विभिन्न वनवासी, पिछड़े या प्राकृतिक आपदाओं से ग्रसित क्षेत्रों के लिए निःशुल्क श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन करते हैं, जिससे प्राप्त राशि उन क्षेत्रों की सेवाओं पर समर्पित होती है।

6. श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान समय–समय पर सामूहिक यज्ञोपवीत एवं वैवाहिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। जिसका जरूरत मंद भक्त लाभ उठा सकते हैं।

7. वृन्दावन स्थित श्रीभागवत गौशाला में गोपालन बड़े ही श्रद्धाभाव से होता रहता है।

8. अप्रैल 2009 में कलकत्ता प्रवास के मध्य श्रीठाकुर जी ने 'श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान' की कोलकाता शाखा का शुभोद्घाटन किया जो कि भारत के पूर्वी क्षेत्रों में आयोजित संस्थान के कार्यक्रमों की देखभाल करेगी।

आप किसी भी रूप से इस संस्थान से जुड़ना चाहते हैं, तो सम्पर्क कर सकते हैं–

पं. लक्ष्मीकान्त शर्मा, वृन्दावन
9837008073

पं. बिष्णु पाठक सारस्वत, कोलकाता
9331033090

क्रूज़ यात्रा

श्रीमद्भागवत सप्ताह

भागवतप्रेमी भक्तगण,

जय श्रीकृष्ण! विगत कुछ समय से भक्तगणों एवं शिष्यों की आकांक्षा थी कि प्रभु सेवा में एक भागवत कथा जलधि (सागर) पर भी होनी चाहिए। भक्तों की अभिलाषा एवं प्रभु की कृपा के फलस्वरूप आगामी वर्ष पुण्यतम पुरुषोत्तम मास में 10 अप्रेल से 19 अप्रेल के मध्य श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, वृन्दावन की सन्निधि में क्रूज़ स्टार वर्गो पर पूरे सात दिनों तक श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ का भव्य आयोजन होने जा रहा है।

पुरुषोत्तम मास में भागवत कथा का श्रवण एवं वह भी सागर पर, यह तो बड़ा ही मनोरम, स्वर्णिम एवं पुण्यतम क्षण होगा। इतने बड़े आयोजन का कार्य भार देने के पूर्व सारी बातों का ध्यान रखते हुए मैंने इस पूरे कथायज्ञ की यात्रा प्रबंधन की जिम्मेदारी श्रीमान् मनोज सर्राफ के सुपुर्द की है।

श्री मनोज सर्राफ का नाम यात्रा–प्रबन्धन के क्षेत्र में नया नहीं है। आप **''गेनवेल इन्टर प्राइजेज प्रा. लि.''** के मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं एवं ख्याति प्राप्त व्यावसायिक समूह से आपका सम्बन्ध है। धर्म नगरी कोलकाता में आपका निवास है। व्यावसायिक यात्रा–प्रबन्धन में तो आप माहिर हैं ही अपितु धर्म में आपकी विशेष आस्था होने के कारण आप धार्मिक (राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय) यात्रा प्रबंधनों में विशेष रुचि रखते हैं। भारत में तो लगभग सभी तीर्थ स्थलों पर आपके द्वारा समय समय पर यात्रा प्रबंधन होता ही रहता है अपितु 2008 एवं 2009 में आपकी कम्पनी ने क्रूज पर क्रमशः सिंगापुर एवं अलास्का में दो बृहत् भागवत कथाओं का सफलता पूर्वक प्रबन्धन किया है।

विगत 18 वर्षों में यात्रा प्रबन्धन के क्षेत्र में दक्षता के पीछे इनकी पत्नी सौ. **मधुलिका सर्राफ** एवं प्रबन्धक **चि. मनदीप** का भी विशेष सहयोग रहा है। यात्रा के दौरान शुद्ध भोजन, स्वच्छ व्यवस्था, सरल एवं मृदु भाषा युक्त सेवा इनकी क्षमता भरी पहचान है।

प्रभु बाँके बिहारी की कृपा रही तो 10 अप्रेल से 19 अप्रेल तक होने वाली भागवत कथा का भी ये पूरी जिम्मेदारी के साथ आयोजन करने में सफल होंगे। मेरी ओर से गेनवेल ग्रुप के सभी सदस्यों को हृदय से आशीष एवं इनके स्वर्णिम भविष्य के लिये राधामाधव से मंगल कामना।

जय श्रीकृष्ण

– **श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुर जी)**

सादर आमंत्रण

10 से 19 अप्रैल 2010

श्रीमद्भागवत सप्ताह

साथ में

सिंगापुर • मलेशिया • थाइलेण्ड

के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण

Payment in Favour of
Bhagwat on Sea - A unit of GEPL
ICICI Bank A/c No. :
105605000168

PLEASE REGISTER BEFORE 15th NOVEMBER 2009 BY PAYING Rs. 25000/- PER PERSON.

कृपया 15 नवम्बर से पहले रु. 25000/– प्रति व्यक्ति देकर आरक्षण करवायें

वार	दिनांक	स्थान
शनिवार	10 अप्रेल 2010	भारत से प्रस्थान
रविवार	11 अप्रेल 2010	सिंगापुर से क्रूज़ यात्रा प्रारम्भ
सोमवार	12 अप्रेल 2010	क्रूज़ – फुकेट (थाईलैण्ड)
मंगलवार	13 अप्रेल 2010	क्रूज़ – लंकावी (मलेशिया)
बुधवार	14 अप्रेल 2010	क्रूज़ – सिंगापुर
वृहस्पतिवार	15 अप्रेल 2010	क्रूज़ – पुलाव रेडांग (मलेशिया)
शुक्रवार	16 अप्रेल 2010	क्रूज़ – सिंगापुर
शनिवार	17 अप्रेल 2010	क्रूज़ – पोर्ट क्लांग (मलेशिया)
रविवार	18 अप्रेल 2010	सिंगापुर (क्रूज़ समाप्त)
सोमवार	19 अप्रेल 2010	भारत वापसी

यात्रा सेवा राशि

Room Category	Per Person
Inside State Room	Rs. 98000/-
Window	Rs. 108000/-
Balcony	Rs. 128000/-

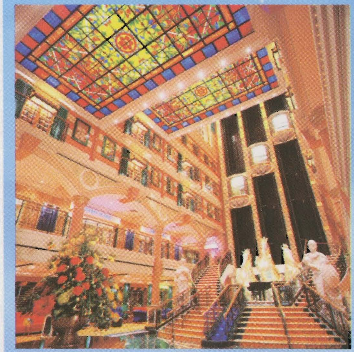

यात्रा प्रबन्धक– GAINWELL Leisure Holidays religious tours

आयोजक : श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान (अन्तर्राष्ट्रीय) वृन्दावन

पुरुषोत्तम मास के पावन एवं स्मरणीय अवसर पर
सिंगापुर से सुपर स्टार वर्गो, क्रूज़ पर

भागवत भास्कर पं. श्री कृष्णचन्द्र शास्त्री (श्रीठाकुरजी) द्वारा

श्रीमद्भागवत कथा

का भव्य आयोजन

साथ में मलेशिया, थाइलेण्ड एवं
सिंगापुर के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण
10 अप्रेल से 19 अप्रेल 2010

कोलकाता
श्रीविष्णु पाठक 9331033090
श्रीसुभाष मुरारका 9831011009
श्रीमहेन्द्र केजरीवाल 9831015439
श्रीप्रदीप झुनझुनवाला 9831226509

बेंगलुरु
श्रीप्रवीण पोद्दार 9845165217

पटना
श्रीशरद चन्द्र 9334499000

मुम्बई
श्रीप्रदीप पोद्दार 9324612660

वृन्दावन
श्रीसौरभ गौड 9837164790

सूरत
श्रीराजकुमार कोकड़ा 9824101558

सिलिगुड़ी
श्रीअमित गोयल 9831095113

कटक
श्रीदेवकीनन्दन जोशी 9437026760

नागपुर
श्रीराम कुमार अग्रवाल 9373106611

गोरखपुर
श्रीविजय मोदी 9793162888

रायपुर
श्रीअगेश कुमार 9300484749

दिल्ली
श्रीराकेश–मीना अग्रवाल 9873646469
श्रीओम प्रकाश बागला 9810969812
श्रीप्रकाश खेतावत 9311165686
श्रीविकास खन्ना 9311138588

यमुनानगर
श्रीराजेश मित्तल 9896340703

Harinam 9837031415

कार्यालय : श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
श्रीभागवतकृपा निकुंज, रमणरेती मार्ग, वृन्दावन-281121 (मथुरा)

सदस्यता शुल्क– पंचवर्षीय : 500 रुपये • आजीवन : 1500 रुपये • एक प्रति : 20 रुपये